

तारांगण

बैंक ऑफ इंडिया की तिमाही गृहपत्रिका दिसंबर 2019



TAARANGAN

Bank of India's Quarterly House Journal December 2019



विषय वस्तु Contents

बैंक ऑफ़ इंडिया

रिश्तों की जमापूँजी
Relationship beyond banking



Block Chain – A fintech transparency vehicle – Devendra Sharma ----- 04

क्या आपको भी यही शिकायत है
– डॉ संजीव पाठक -----10



Sports Personalities of BOI
– JUHI MAURYA The Triathlete----- 12

Journey of Risk Management
(Brake or Break) through the western ghats
– Md. Azharuddin ----- 14

Making of a Brand – Arun Kumar ----- 27



कवर स्टोरी - 'वारली चित्रकला'
– महेश विद्याधर मोहरे ----- 28

Relevance of Economics
– Hemant Kolhapure ----- 30

मन, वचन और कर्म में सुख-संतुष्टि
के लिए आवश्यक है 'स्व प्रेरणा'
– मृत्युंजय कुमार गुप्ता -----34



Attukal Pongala – From the land which worships the lady – Ajith I.K.----- 36



प्लास्टिक कचरा प्रबंधन
– प्रियंका शर्मा ----- 38

किलों का राजा रायगड
– निलय ज.नागदेवे-----40



Prevention of frauds
– Dinesh Parmar----- 42

समय चक्र – कंचन कुमार -----45

"पं. सुरेश बापट को मिला सम्मान"----- 47



जल संसाधन प्रबंधन
– वैशाली रामटेके -----48

A successful business
requires a clear vision
– V.P Srivastava ----- 50



डिजिटल युग में भारतीय बैंकिंग के
बढ़ते कदम व इससे जुड़ी
सावधानियां– अमरीश कुमार-----52

तापमान में विश्वव्यापी
वृद्धि – अमित कुमार-----56

संपादकीय मंडल / Editorial Board

आर. पी. गुप्ता
महाप्रबंधक

R. P. Gupta
General Manager

के. राजारामन
महाप्रबंधक

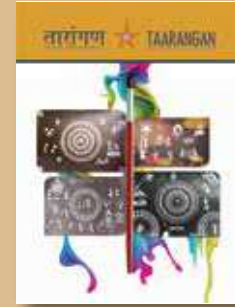
K. Rajaraman
General Manager

ईश्वर चंद्र मिश्रा
महाप्रबंधक

Iswar Chandra Mishra
General Manager

एस. चंद्रशेखर
संपादक

S. Chandrashekhar
Editor



Cover Page
Warli Painting by
Deepak Bandgar
Ambajogai Branch
Solapur Zone

यह आवश्यक नहीं कि पत्रिका में छपे
लेखों में व्यक्त विचार बैंक के हों।

Printed, Published and Edited by

S. Chandrashekhar on behalf of Bank of
India, Published from Head Office :

Star House, G-5, 'G' Block,
Bandra Kurla Complex, Bandra (E),
Mumbai - 400 051 and printed at

PRINTRADE ISSUES (INDIA) PVT. LTD.

17, Pragati Industrial Estate,
316, N.M. Joshi Marg,
Mumbai - 400 011.

प्रबंध निदेशक एवं सीईओ / MD & CEO



प्रिय साथियों,

गृह पत्रिका तारांगण के माध्यम से आपसे संपर्क करने में मुझे बेहद खुशी हो रही है। लगातार चार तिमाहियों में हमने निवल लाभ दर्ज किया है जिसके लिए मैं बीओआई परिवार के प्रत्येक सदस्य को बधाई देता हूँ। हालांकि ये लाभ हमारी अपेक्षाओं के अनुरूप नहीं हैं, फिर भी हम सही दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। साथ ही मुझे पूरा विश्वास है कि हम सब यह जानते हैं कि हमें अपने वास्तविक मुकाम तक पहुँचने के लिए और भी बहुत कुछ करना है।

हमारी इस कायापलट के पीछे आप सब की कड़ी मेहनत और लगन है। परन्तु हमें इन छोटी-मोटी सफलताओं से संतुष्ट नहीं होना चाहिए। हमें अपनी शक्तियों को एकजुट कर अपने बैंक को ऑर्बिट नेक्स्ट में ले जाना है। इस वित्तीय वर्ष के लिए हमारा लक्ष्य क्या है यह हम अच्छी तरह जानते हैं। अतः इस वित्तीय वर्ष के अंतिम चरण में हमें अपना पूरा ज़ोर लगाना होगा।

हमें अपनी मानव शक्ति का इष्टतम प्रयोग सुनिश्चित करना होगा। विशेष कौशल युक्त अधिकारियों के कौशल का पूर्ण सदुपयोग किया जाना चाहिए। कारोबार के जिन वर्गों को लक्ष्य बनाकर स्पेशल पर्पस यूनिट बनाए गए थे, उन्हें अपना उद्देश्य पूरा करना होगा। हाल में आयोजित कारोबार समीक्षा बैठक - जेडएमसी में हमारे कार्यनिष्पादन और हमारी प्राथमिकताओं के बारे में विस्तार से चर्चा की गई थी और सही कार्य हेतु सही व्यक्ति की तैनाती न करने की खामियों पर प्रकाश डाला गया था। आपको यह जानकर खुशी होगी कि हाल में भविष्य का नेतृत्व, टैलेंट पाइपलाइन, कर्मचारी विकास केंद्र और पदारोहण योजना जैसे क्षेत्रों में कई मानव संसाधन संबंधी पहल किए गए हैं। इनसे हमारी सबसे मूल्यवान् आस्ति हमारी मानव शक्ति और भी सुदृढ़ होगी जिससे बैंक के लिए उनका इष्टतम योगदान सुनिश्चित होगा।

चूंकि हमें अपने लक्ष्य और वहां पहुंचने के मार्ग की पूर्ण जानकारी है, हमें उन्हें साकार करने हेतु सम्मिलित प्रयास करने होंगे। एनबीजी प्रमुखों एवं अन्य वर्टिकल्स के प्रमुखों को अपने नियंत्रणाधीन विभिन्न इकाइयों की प्रगति की आवधिक निगरानी करनी होगी। यह सुनिश्चित किया जाए कि हमारा ध्येय या विज़न क्या है, इससे प्रत्येक कर्मी भली भांति परिचित हो और हम अपने लक्ष्य तक पहुंच सकें।

तारांगण, विभिन्न बैंकिंग विषयों के साथ-साथ अन्य महत्वपूर्ण विषयों के संबंध में हमारे ज्ञान और हमारी उपलब्धियों को साझा करने का एक उत्तम साधन है। टीम तारांगण को मेरी शुभकामनाएं। मुझे पूरा विश्वास है कि वे अपनी पत्रिका के माध्यम से पाठकों का ज्ञानवर्धन एवं मनोरंजन करते रहेंगे।

शुभकामनाओं सहित

Dear Colleagues,

It gives me immense satisfaction in communicating with all of you through this in-house magazine. My congratulations to each and every member of BOI family for recording net profit in the past four quarters. Even though the profit margins are not as good as desired, it's a step in the right direction. But I am sure, we all understand that a lot more needs to be done to realize our true potential.

It is true that a lot of hard work has gone in to achieve this turn around. But we just can't bask in this glory of the past. We have to channelize our energies to take our Bank to ORBIT NEXT. We know where we want to see ourselves at the end of this fiscal. Therefore, we need to go full steam in the last leg of this financial year.

We also need to ensure optimum utilization of our manpower. Officers with specialized skills should be primarily utilized for the purpose for which they were identified. Special purpose units created to specifically focus on certain business categories, should fulfill their objectives. In the recent business review meet-ZMC, our performance as well as our priorities were discussed thread bare and the ill effects of not deploying the right person for right job was underlined there. You will be happy to note that a lot of HR initiatives have been taken recently in areas like future leadership, talent pipeline, Employee Development Centres and Succession Planning, to name a few. These will further empower our manpower, the most valuable asset, to optimise their contribution for the Bank.

Since we now have a clear idea of the path, concerted efforts are needed to make achievement of the goals a reality. Leaders of NBGs and various other verticals must periodically assess the progress made by different units under their command and act decisively. It should be ensured that our vision reaches the grass root level for better delivery of the desired objective.

Our house journal Taarangan is an excellent medium to share our knowledge of various banking as well as other important subjects and also our achievements. My best wishes to team TAARANGAN. I am sure they will continue to churn out interesting and insightful articles.

With best wishes,

(ए. के. दास A. K. Das)



संपादकीय Editorial

प्रिय पाठकों,

तारांगण का नवीनतम (दिसंबर 2019) अंक आपको प्रस्तुत करते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है। इस अंक को ऐसे समय में जारी किया जा रहा है जब हमारे बैंक के नेतृत्व में परिवर्तन हो रहा है। हम सब के प्रिय कार्यपालक निदेशक श्री ए.के.दास जी ने हमारे बैंक के नए एमडी एवं सीईओ के रूप में पदभार गृहण किया है। टीम तारांगण श्री दास जी का हार्दिक स्वागत करती है और यह कामना करती है कि हमारे बैंक में उनका यह कार्यकाल अत्यंत सफल रहे।

आज पूरा विश्व जलवायु परिवर्तन के विभिन्न प्रभावों से ग्रस्त है और लगभग प्रत्येक देश पृथ्वी की रक्षा हेतु कुछ न कुछ कर रहा है। हमारे देश ने इस दिशा में कुछ ठोस कदम उठाए हैं, विशेष रूप से 'सिंगल यूज प्लास्टिक' का प्रयोग बंद करने, जल संरक्षण आदि के क्षेत्रों में। हमारे बैंक ने भी अपनी ओर से इस नेक कार्य में योगदान किया है। हमारे उच्च प्रबंधन ने प्रधान कार्यालय में 'सिंगल यूज प्लास्टिक की पानी की बोतलों' का प्रयोग वर्जित कर प्रधान कार्यालय को सिंगल यूज प्लास्टिक बॉटल मुक्त किया है।

हमने महाराष्ट्र की प्रसिद्ध जनजातीय चित्रकला 'वारली चित्रकला' को इस अंक के कवर थीम के रूप में चुना है। तारांगण के मुख्यालय पर जो वारली पेंटिंग प्रदर्शित किए गए हैं उन्हें सोलापुर अंचल की अंबाजोगाई शाखा में कार्यरत अधीनस्थ स्टाफ श्री दीपक बंडगर ने बनाए हैं जो इस विधा के एक निपुण चित्रकार हैं। 'वारली चित्रकला' पर इस अंक की कवर स्टोरी लिखी गई है। इस के अलावा हमने ब्लॉक-चेन, जोखिम प्रबंधन, बैंकों में धोखाधड़ी निवारण, प्लास्टिक कचरा प्रबंधन, बीओआई के खिलाड़ी, डिजिटल बैंकिंग इत्यादि और कुछ सामाजिक विषयों पर आलेखों को तारांगण के इस अंक में स्थान प्रदान किया है।

यह सच है कि वर्तमान में हमारे बैंक के सामने कठिन चुनौतियां हैं, पर हमें पूरे उत्साह के साथ अपने लक्ष्य की ओर बढ़ना है और नेपोलियन बोनापार्ट के इन शब्दों को याद करना है "जीत उसी की होती है जो सबसे अधिक दृढ़ रहता है।"

तारांगण की डिजिटल प्रति अब हमारी वेबसाइट www.bankofindia.co.in पर "Human Resources" – "Star Varishtha Parivar" के तहत भी उपलब्ध है। कृपया अपने मूल्यवान फीडबैक हमें Headoffice. Taarangan@bankofindia.co.in पर प्रेषित करें ताकि हम इस गृह पत्रिका में और निखार ला सकें।

शुभकामनाओं सहित

Dear Readers

I am delighted to present the latest (December 2019) issue of our house journal Taarangan. This issue is coming out at a time when there is a leadership change in our Bank. Our beloved Executive Director Shri A.K.Das has taken charge as the MD & CEO of our Bank. Team Taarangan extends a very warm welcome to Shri Das and wishes him a very successful term in BOI.

Today the world is witnessing various effects of climate change and almost every country is doing its bit to save our planet. Our country has also taken some bold steps in this direction, especially in the area of discontinuing use of 'Single use plastic', water conservation etc. Our Bank has also pitched in with its own efforts. One such being the banning of single use plastic and making our Head Office "Single use PLASTIC BOTTLE FREE" by our top management.

We have chosen Warli paintings, a tribal art form from the state of Maharashtra, made by Shri Deepak Bandgar, sub-staff of our Ambajogai Branch in Solapur Zone as the cover theme (front and back) of this issue of Taarangan. An article on Warli paintings is included as cover story. In addition articles covering subjects such as block-chain, Risk Management, Prevention of frauds in Banks, Plastic-waste management, sports personalities of BOI, Relevance of Economics, Digital Banking etc and some social issues find a place in this issue of Taarangan.

It is true that as a Bank, we are facing testing times, but we must work towards our goal with passion and also remember what the great Napoleon Bonaparte said, "Victory belongs to the most persevering".

Soft copy of "Taarangan" is now available on BOI website www.bankofindia.co.in under "Human Resources" – "Star Varishtha Parivar". Please send your feedback to Headoffice. Taarangan@bankofindia.co.in which would help in making this a better house journal.

With best wishes

(एस. चंद्रशेखर S. Chandrashekar)



BLOCKCHAIN : A FINTECH TRANSPARENCY VEHICLE

The financial service space is marred with frauds, malfeasance, corruption and other misdeeds due to lack of transparency as well as lack of control over inter organisational coordination. To obviate such an opaque and restrictive practice in financial sector many technical models have been flourishing to lessen the intermediation and make the transactions seamless, faceless and cost effective. However, most of such digital solutions still have limitation of data storage, data protection and data concentration due to centralised data systems. This is where the excitement in the “Fintech” space is with the “Blockchain” technology. “Fintech” is an abbreviation for Financial Technology that describes the evolving intersection of financial services and technology. Since the internet revolution, the term Fintech stands for technologies that are disrupting traditional financial services, including mobile payments,

BLOCKCHAIN is a public ledger of information collected through a network that sits on top of the internet.

money transfers, loans, fundraising, and asset management. Every time you go online to see your financial transactions or use tools to manage your spending and investments, you are making use of the Financial technology or Fintech. The other often heard term has become the “Blockchain”. Originally, the brainchild of Satoshi Nakamoto, a pseudonym of the initiator of this technology to conceive and roll out the digital crypto currency known as Bitcoin.

Understanding Blockchain

Blockchain is a public ledger of information collected through a network that sits on top of the internet. The information recorded on a blockchain can take on any form, whether it be denoting a transfer of money, ownership, a transaction, someone’s identity, an agreement between two or multiple parties, or even how much electricity a lightbulb has used. The information is stored in the form of blocks. When a block stores new data it is added to the blockchain. In order for a block to be added to the blockchain, however, four things must happen:

- A transaction must occur
- That transaction must be verified.

- That transaction must be stored in a block

- That block must be given a unique, identifying code called a hash.

The block is also given the “Hash-value” of the most recent block added to the blockchain. Once hashed, the block can be added to the blockchain and becomes part of the record.

This technology enables the distribution and copying of digital data across different nodes. Any change or modification will alter the hash values in the chain, and it is easy to detect a malfunction. This is because of the complicated and intricate “cryptography” behind it.

The basic principles underlying blockchain technology:

- **A distributed database:** Each entity on a blockchain can access records on the entire database, but no single entity controls the data or the information.

- **Peer-based communication:** Communication is not through a central node, but occurs directly between peers. Each node stores and forwards information to all other nodes.

- **Transparency:** All transactions and associated values are visible to anyone with access to the system.

However, each user can choose to provide their identity to others or remain anonymous.

- **Permanent records:** Once a transaction is entered, the records cannot be altered as they are linked to every transaction record that came before them in the “chain”. This immutability is what makes blockchain such a good foundation for fintech applications.

- **Computational logic:** Due to its digital nature, blockchain transactions can be tied to computational logic and in essence, programmed. Users can set up algorithms and rules that automatically trigger transactions between nodes.

For centuries we have trusted a third party for carrying out all our transactions. All the data is centrally stored and these central parties majorly formed the way economies work. There is immense possibility of foul play if one or all of these third parties went corrupt. With Blockchain the data is decentralized and there is no single authority. The Blockchain potentially cuts out the middleman, giving back the power to the owner of the assets – data or tokens carrying some financial value.

Participants : Governments, financial services companies, regulators, logistic service providers, corporates, etc. together form an ecosystem. All the participants of this ecosystem face different challenges and opportunities and with the advancement in technology every day, this landscape becomes more dynamic and complex than ever.

The blockchain sector in fintech has been intended to provide

banking with a more seamless and effective experience, from cost reductions to uncheck unconditional bureaucracies in the traditional banking sector. This augurs well for both the bank and the clients.

- The most significant effect this technology will probably have is to reduce fraud and cyber attack in the financial world, significantly.

- Blockchain assists in curbing data breaking and other comparable fraudulent operations to enable fintech businesses to share or transfer safe and unaltered information through a decentralised network.

- Smart contracts are one such invention which guarantee that before a contract or transaction between two parties is concluded commitments are met.

THE Blockchain potentially cuts out the middleman, giving back the power to the owner of the assets...

Blockchain In Fintech

Blockchain enthusiasts are continuously experimenting with this technology to bring out new use cases and applications to solve the redundant and complex issues in the fintech industry. A few of the blockchain applications which are already popular among the Banking, Financial Services and Insurance (BFSI) sector are:

- **Smart Contracts:** A smart contract is a computer code running on top of a blockchain containing a set of rules under which the parties to that smart contract agree to interact with

each other. When these predefined rules are met, the agreement is automatically enforced. The smart contract code has the ability to facilitate, verify, and enforce the negotiation or performance of an agreement or transaction.

- **Digital Payments:** The transfer of value or assets has always been a slow and expensive process. When you have to send money from one country to another, who has an account with a local bank, it takes a number of banks and institutions to finally collect the money. The idea is to provide frictionless and near-instant payment solutions. Unlike traditional services, a blockchain network doesn't rely on a slow process of approving transactions, which usually goes through several mediators and requires a lot of manual work. With Blockchain, this process is simplified and faster at a cost much less than the traditional banking institutions.

- **KYC Verification & Digital Identity:** When identity management is moved to blockchain technology, users are able to choose how they identify themselves and with whom their identity is shared. Users still need to register their identity on the blockchain of course. But, they don't need a new registration for every service provider, provided those providers are also connected to the blockchain. Blockchain solutions are being used widely for authentication, verification and storage of electronic records in the banking industry as well as to create a KYC utility for any National Stock Exchange.

- **Share Trading:** Buying and selling stocks and shares involves many

middlemen, such as brokers and the stock exchange itself. Eliminating the middlemen from the share trading process speeds up the settlement process and allows for greater trade accuracy. Blockchain will also help eliminate the dark tactics of the stock market such as stock tampering, processing time and charges, naked short selling, as well as commissions of all intermediaries.

Supply Chain Financing and Management: Blockchain allows significantly higher settlement turnaround at lower costs. This happens by providing a single source of truth regarding pivotal points in the supply chain, like creditworthiness, supplier inventory levels, purchase order receipt and approval, invoice receipt and approval, and more.

Records Storage and Management: Documents in physical or digital form can be modified and copied. While there are many products and services that provide secure and verified document management, they tend to be expensive and often require the involvement of a third party. Blockchain embeds authentication into the document itself and using a closed-loop tracking system to protect against tampering or modification.

Secure Digital Regulatory Process: Blockchain's immutability lends itself to the application of proof-of-process for compliance. Blockchain could be used to keep track of the steps required by regulation. Recording actions and their outputs immutably in a blockchain would create an audit trail for regulators to verify compliance.

Disrupting Digital Insurance: By allowing policyholders and insurers to track and manage physical assets digitally, blockchain technology can codify business rules and automate claims processing through smart contracts, while providing a permanent audit trail. Insurance giants and startups alike are attempting to use blockchain technology to prevent insurance fraud, digitally track medical records, and more.

Credit Scoring: Fintech companies are widely using blockchain to cater to the unbanked population lacking CIBIL score and helping them get credit. Earlier this year, Telangana government joined hands with London-based startup Cognito Technologies to kick off a pilot project, wherein it will leverage blockchain technology to come up with credit scores of those from economically weaker sections of society.

Faster Processing Speed: The distributed ledger could make it possible to connect all parties in a financial trade in real-time for faster processing of a payment. For instance, if you use another bank's cash machine (ATM) today, that bank must contact your bank to make sure you have enough funds in your account before dispensing the cash. If both banks used the same blockchain ledger, the bank could dispense the funds instantly without waiting for approval.

Eliminating Audit Trails: The transparency of information and permanence of records makes it nearly impossible to alter or manipulate the data, so banks no longer have to keep redundant audit

trails of transactions; the transaction ledger is the audit trail.

Examples Of Present Day Factual Happenings

Banks in Canada, Europe and other countries – some of those being IBM, SecureKey, HSBC, Deutsche Bank and KBC – are using blockchain to place their customers' identities on it as well as developing a blockchain system for trade finance. This clearly indicates the reliance placed on blockchain and its potential for making innovations come alive while driving business. Blockchain technology was initially used to support the digital currency Bitcoin but is now being explored for a wide variety of applications that don't involve Bitcoin.

In India, following are examples of happenings lately:

- Indian Institute for Development and Research in Banking Technology (IIDRBT a part of RBI) is working on use of Block Chain technology in Banking
- YES Bank uses blockchain in its Invoice Financing product and is in process and is registering vendors.
- YES Bank has facilitated the issuance of a commercial paper (CP) of INR 100 Cr using blockchain technology for Vedanta, a natural resources conglomerate. The bank used R3 Corda enterprise blockchain platform developed by US-based MonetaGo to facilitate the issuance.
- AXIS BANK is using Blockchain for Inward remittances solution for retail customers in Gulf and Singapore by partnering with RAKBank and Stanchart. Using Ripple for Cross Border Transactions network

- ICICI BANK is trying specific Block chain technology for trade finance and remittances as also a small closed loop wallet transaction.
- SBI is planning to use Blockchain for smart contracts or KYC
- IIN (Interbank information Network) platform is initiated by JP Morgan has Indian Banks partnering in its (Pvt Banks- ICICI, AXIS, Yes, Federal bank; Public Banks – Canara Bank, Union Bank of India). These banks have joined a live application of Blockchain Technology mainly for providing secure exchange information associated with cross border payments such as compliance

As with any emerging technology-Blockchain poses certain challenges that need to be addressed to fully utilize its potential ...

sanctions, AML inquiries. Globally 330 Banks have signed in to IIN

Conclusion

The Blockchain technology is now not to be considered as new as it is more than a decade old with the advent of crypto currency "Bitcoin". There was quite an excitement in the banking circles initially, however, the idea of Peer-to-Peer transactional capability also had a disruptive potential for the Financial intermediaries such as banks, their need and existence was also challenged. Hence, with initial excitement there was period of lull for a few years. However, with advancement in the understanding they have realised that this technology can be adapted in models without total elimination of role of banks/FIs. They can utilise the benefits of greater speed, reduced costs in transactions across the national and international borders by sharing the platform and provide seamless transparent services.

With the potential seen by the Fintech industry in blockchain, in my opinion the technology will take a few more years to become a mainstream financial model. As with any emerging technology-Blockchain poses certain challenges that need to be addressed to fully utilize its potential in the financial services industry. The on-boarding of all the participants in the financial eco-systems particularly Government, Regulators, 3rd party service providers, logistics owners, FIs, Banks, Corporates, legal custodians, etc. working with different technologies and their tech integration is the main challenge. However, the private blockchains as a subset within the mentioned fintech participants is a definite possibility.

Devendra Sharma,
Chief Vigilance Officer



नव वर्ष चले आना

नव वर्ष चले आना
नव वर्ष चले आना
मन के चौरे पर
एक दीप जला जाना ।
दुख-दरद परस जाना
पिछले घावों पर
तुम मरहम रख जाना ।
छत बनकर तन जाना
बेघर बुढ़िया की
तुम लाठी बन जाना ।
घन बनकर छा जाना
होरी के दुआरा

एक गाय बंधा जाना ।
कबिरा से मिल आना
ढ़ाई आखर फिर
धरती पर लिख जाना ।
इकतारा बन जाना
दरद-दीवानी का
हरकारा बन जाना ।
आओ घर चलना है
शहर की मजदूरी
माया है छलना है ।
आना सावन बनकर

गुड़-चिउरा दूंगा
अंजुरियाँ भर भरकर ।
हर ओर अंधेरा है
आओ बतलाओ
उस ओर सबेरा है ।
ना देर लगाना तुम
नेह निमंत्रण यह
मिलते ही आना तुम ।

राकेश कुमार
राजभाषा अधिकारी
आंध्र प्रदेश अंचल



क्या आपको भी यही शिकायत है?

आमतौर पर हर घर में एक ही शिकायत होती है कि बच्चे उनकी नहीं सुनते। वे अपनी मर्जी से जो मन में आता है वही काम करते हैं। क्या हमने कभी सोचा है कि उनका भविष्य क्या है? और क्या वे सही दिशा में जा रहे हैं? हमारा यह सोचने से पहले यह भी सोचना जरूरी है कि क्या हम उन्हें वह वातावरण दे पा रहे हैं जिसकी उन्हें जरूरत है? और जो उनके मानसिक और शारीरिक विकास के लिए आवश्यक है। बहुत बार हम इस आवश्यकता को यह कहकर नकार देते हैं कि अभी बच्चे छोटे हैं, जब बड़े होंगे तब देख लिया जाएगा। लेकिन यह हमारी सबसे बड़ी भूल है। बच्चे जब छोटे होते हैं तभी उन्हें हम सही रास्ते पर ले जाने के लिए सफल प्रयास कर सकते हैं। बच्चों के बड़े हो जाने पर ये प्रयास 90 से अधिक प्रतिशत मामलों में असफल साबित होते हैं। एक बहुत छोटा सा उदाहरण देना चाहता हूँ कि जैसे कोई वृक्ष जब छोटा होता है तो उसे हम किसी भी दिशा में मोड़ सकते हैं लेकिन जब वह बड़ा हो जाता है तो हमारा उसे मोड़ने का प्रयास वृक्ष के लिए हानिकारक हो सकता है यानी कि वह टूट सकता है।

कैसे होगा उनका सर्वांगीण विकास

अब हमें यह सोचना है कि हमें उनके समुचित विकास के लिए क्या करना चाहिए। उनका मानसिक विकास, शारीरिक विकास, सामाजिक विकास और शैक्षिक विकास ये चारों उनके सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक हैं। उनका हमारी बात ना सुनना, लगातार टेलीविजन देखते रहना, पब्जी और ऐसे ही दूसरे मोबाइल खेलों पर हमेशा अपना ध्यान केंद्रित करना, समय पर भोजन ना खाना और अगर खाना तो आधा अधूरा खाना, समय पर पढ़ाई ना करना, जब आप उन पर सख्ती बरतें तो उनका रोगी की भांति व्यवहार करना, यह हर घर की कहानी बन गया है आखिर ऐसा क्यों हो रहा है? क्या है इसका उत्तर, कैसे मिलेगा इसका समाधान, आइए इस पर गौर करते हैं।

बच्चे जब छोटे होते हैं तभी उन्हें हम सही रास्ते पर ले जाने के लिए सफल प्रयास कर सकते हैं। बच्चों के बड़े हो जाने पर ये प्रयास 90 से अधिक प्रतिशत मामलों में असफल साबित होते हैं।

क्या हम बच्चों का हक दे रहे हैं

सबसे पहले हमें यह देखना होगा कि क्या हम बच्चों को वह सब दे पा रहे हैं जिसके वे हकदार हैं। यह ध्यान रखें कि बच्चों को सिर्फ पैसा या घर की नौकरानी का प्यार नहीं चाहिए, उन्हें आपका समय और आपका प्यार चाहिए, मां-बाप का प्यार चाहिए। मां-बाप का समय चाहिए। यदि आप यह उनको दे पाएंगे तो उनकी समस्या काफी कुछ समाधान की ओर आगे बढ़ेगी। हम जानते हैं कि हम सब के पास केवल 24 घंटे का समय ही है और उसमें हमें बहुत सारे काम करने हैं लेकिन क्या उन 24 घंटों में से कुछ घंटे हम परिवार के लिए, अपने बच्चों के लिए नहीं निकाल सकते जिनके लिए हम दिन-रात मेहनत करने का दम भरते हैं।

समय न होने का बहाना

हर कोई यही कहता है कि उसके पास समय नहीं है। समय न मिल पाने की आम शिकायत पर मैं एक किस्सा बताना चाहता हूँ। एक बुजुर्ग से किसी ने आकर पूछा कि मेरे पास भगवान की भक्ति करने के लिए समय नहीं है, तो बुजुर्ग ने कहा कि यह जो सामने एक आयताकार बॉक्स रखा है, यह खाली है इसमें कुछ पत्थर लाकर भरिए। उन सज्जन ने पत्थर लाकर वह बॉक्स भर दिया और कहा कि अब इसमें और पत्थर नहीं भरे जा सकते हैं। तब बुजुर्ग ने कहा कि इसमें छोटे-छोटे पत्थर भर दीजिए। उन्होंने ऐसा ही किया और फिर बताया कि अब इसमें छोटे पत्थर भी नहीं भरे जा सकते हैं। अब बुजुर्ग ने उनसे कहा इसमें कुछ बालू लाकर भरिए, तब उन्होंने बालू लाकर उस बॉक्स को भर दिया और कहा कि बस अब इसमें कुछ नहीं आ सकता। इस पर बुजुर्ग ने उसे फिर कहा यदि इसमें कुछ नहीं आ सकता तो एक जग पानी लेकर आइये और इसमें डाल दीजिए। पानी आयताकार पात्र में समा गया। तब उसने कहा हमारे पास स्थान सीमित था लेकिन उसी स्थान में बड़े पत्थर,



छोटे पत्थर, बालू और पानी चारों चीजें समा गईं जबकि बड़े पत्थर भरने के बाद उसमें स्थान का अभाव दिख रहा था। इसी तरह 24 घंटे का समय है जो हमें भरा हुआ दिखता है, हमें उसमें से कुछ घंटे निकालने हैं, अपने परिवार के लिए, अपने बच्चों के लिए और अपनी मानसिक शांति के लिए।

समय प्रबंधन

हम अपना समय प्रबंधन इस तरह करें कि हमारी प्राथमिकताएं सबसे ऊपर हों और बाकी सब उसके बाद। कोई भी इस बात को नकार नहीं सकता कि परिवार उसकी प्राथमिकता नहीं है या बच्चे उसकी प्राथमिकता नहीं हैं। हम खुद इस बात को महसूस करें कि एक आया द्वारा पालन-पोषण किया गया बच्चा और एक मां द्वारा पालन पोषण किया गया बच्चा किस तरह का व्यवहार करता है। क्या उसमें आत्मीयता है? क्या उसमें अपने और पराए की समझ है? क्या उसमें वह संस्कार हैं जो हम उसमें देखना चाहते हैं? यदि नहीं तो हमें तुरंत इसमें बदलाव लाना होगा।

हमारा आचरण

यह आम शिकायत है कि बच्चे दादा-दादी या घर के बड़ों के चरण स्पर्श नहीं करते। उनका कहना नहीं मानते। इस अपेक्षा से पहले हमें यह महसूस करना जरूरी है कि क्या हम अपने माता-पिता के साथ वही बर्ताव करते हैं जो हम अपने बच्चों से अपने प्रति अपेक्षित रखते हैं। अगर हम वही व्यवहार करेंगे जो हम बच्चों से चाहते हैं तो निश्चित तौर पर वह हमारा अनुसरण करेंगे और यही शिक्षा देने का सही तरीका है। कहा जाता है कि 'मातृ देवो भव' तत्पश्चात् 'पितृ देवो भव' और अंत में 'आचार्य देवो भव' क्या हम इस परंपरा को अपने परिवार में जन्म दे रहे हैं? हमें इसे सोचने और इस पर गौर करने का समय निकालना चाहिए।

धन ही निर्धन बनाता है

सिर्फ धन कमाना और यह कहना कि हमने अपनी जिम्मेदारी पूरी की है, समस्या का हल नहीं है। हम धन कमा सकते हैं लेकिन उससे न तो अच्छा स्वास्थ्य खरीद सकते हैं, न अच्छे संस्कार खरीद सकते हैं। ये सब पीढ़ियों से आता है और हम अगली पीढ़ी को क्या दे रहे हैं, इस पर हमें गौर करना चाहिए। धन ही निर्धनता का मूल है। हमें उसे नियंत्रित होकर कमाना और खर्च करना चाहिए।

परिवारों का विघटन

पिछले कुछ वर्षों में परिवारों के विघटन का बहुत बड़ा कारण तथाकथित आधुनिकीकरण है। हमारे परिवार संकुचित हो रहे हैं और संकुचित

“सिर्फ धन कमाना और यह कहना कि हमने अपनी जिम्मेदारी पूरी की है, समस्या का हल नहीं है।”



परिवारों में भी अनुशासन की कमी है। पति पत्नी का नहीं सुनता, पत्नी पति का नहीं सुनती, बच्चे उन दोनों का नहीं सुनते। यह बहुत ही भयंकर स्थिति है। हमें इस तस्वीर को बदलना है लेकिन यह बदरंग तस्वीर होने का कारण क्या है? हम सोसाइटी के दबाव में छुट्टियों पर बाहर घूमने जाते हैं, महंगी गाड़ियां खरीदते हैं, घर में हर एक के पास स्मार्टफोन हो उसकी कोशिश करते हैं, घर का खाना किसी को पसंद नहीं आता इसीलिए हर रोज बाहर का खाना आर्डर करते हैं, हम बड़े ब्रांड पर गौर करते हैं, ना कि माल की गुणवत्ता पर। हम महंगे सैलून, पार्लर, कपड़े, इलेक्ट्रॉनिक सामान खरीदने में अपनी शान समझते हैं। बर्थडे और शादी की सालगिरह मनाने के लिए एक ही शाम में हजारों रुपए फूक देते हैं। कुछ लोगों के पास इसके लिए पैसा है और जिनके पास नहीं है वह लोन लेते हैं। इससे हमारे फालतू के खर्च बढ़ते हैं। जो हमारे पास नहीं है उसको हम पहले ही खर्च कर लेते हैं, क्रेडिट कार्ड उसका सबसे बड़ा उदाहरण है।

जीवनशैली में सुधार करें

हम ऐसी जीवनशैली अपना रहे हैं जो हमारे लिए, हमारे परिवार के लिए और हमारे बच्चों के लिए प्रतिकूल है। लेकिन हमेशा की तरह हमारे पास यह सब सोचने का समय नहीं है। इसलिए अभी समय निकालिए और फुरसत के कुछ पल बैठकर अपना और बच्चों का भविष्य तय करिए। कहीं ऐसा न हो कि इसमें काफी देर हो जाए और अधिक कमाने के चक्कर में आप बहुत कुछ गँवा बैठें।

डॉ. संजीव पाठक
उप आंचलिक प्रबन्धक,
मुंबई उत्तर अंचल



Sports personalities of BOI

JUHI MAURYA The Triathlete

JUHI MAURYA is an Officer of our Bank presently posted at Z.O.Mumbai North. She is an exponent of a high endurance sport Triathlon, which is not a very well known or popular sport in India, but it is slowly picking up. She has been actively participating in Marathons since last one and half year and has done several half marathons (21KMs) and one Full marathon (42kms). Recently she forayed into Triathlons.

Triathlon is a multi sport race with three continuous and sequential endurance races. It is said to combine 3 of the highest endurance sports viz. swimming, cycling and running over various distances sequentially in one sport. One of the most popular triathlon format is Ironman Triathlon organised by World Triathlon Corporation. It is widely considered one of the most difficult one-day sporting events in the world. The race stipulates cut off time for completion of each leg and overall cut off time for overall completion of the race. Any participant who manages to complete the triathlon within these time constraints is designated an Ironman.

The most common race distances in Triathlon are as below:

- Full Iron Distance Triathlon: 3.8Km Swim, 180Km Cycle, 42 Km Run
- Half Iron Distance Triathlon: 1.9Km Swim, 90Km Cycle, 21 Km Run
- Olympic Distance Triathlon: 1.5Km Swim, 40Km Cycle, 10 Km Run
- Sprint Distance Triathlon: 750mtr Swim, 20Km Cycle, 5 Km Run



DECCAN TRIATHLON : One of the major Triathlon events conducted in India is held at Kolhapur each year, Deccan Triathlon. Ms Juhi did her debut triathlon at Kolhapur Sports club organised Deccan Triathlon 2019. It had three categories of distances:

Half Iron Distance Triathlon: 1.9Km lake Swim, 90Km Cycle, 21 Km Run

Olympic Distance Triathlon: 1.5Km lake Swim, 40Km Cycle, 10 Km Run

Sprint Distance Triathlon: 750mtr lake Swim, 20Km Cycle, 5 Km Run

JUHI's Triathlon experience in her own words...

"I had participated in the Olympic distance Triathlon and successfully completed the distance one hour lesser than stipulated cut off. The race preparation requires extensive practice in each sport in order to build endurance to finish these races. The race days are generally early morning start on weekends with flag off timings



TRIATHLON is a multi sport race with three continuous and sequential endurance races viz. swimming, cycling and running over various distances...

being 6-7 a.m. Typically, the schedule is to get up around 3-4 a.m. in the morning on a weekend, have a pre workout breakfast which would be ideally 1-2 hr before the race starts. The participants have to assemble at the race venue at least an hour before the start time in order to do a final check on their transition point preparation and bike conditioning. Transition point is the place where the athlete transitions from swim leg to bike leg and bike leg to run leg. The athletes are supposed to check in their bikes a day before the race. On the race day before start of the race the athletes have to do the final bike check w.r.t air, lubing, gears, etc. energy gels and bars which we will be carrying during the race to keep fuelling during the race, shoes, caps, helmets and other such stuff at the transition area. The swim leg is generally open water swims (Lakes in Local events and Sea in International events). The race has a mass start, with all athletes tiding into the water at once each trying to outdo one another in order to find their free swimming space in water. There is a lot of kicking on face, back, etc and visibility in an open water swim is also poor. There's a huge difference in having a leisure swim at the pool and a long-distance endurance swim in open water. These races cover almost a big loop of the lake or 1-2 km inside the sea and out. The experience feels like we have been swimming forever and no view of the horizon, trying to maintain the breathing at normal level, so we don't choke on the water, as there is no surface to hold on once in middle of the water body. So, it's a constant struggle to breathe normally and maintain balance and buoyancy till we are back to the shore. The blood circulation goes crazy and one starts feeling dizzy after spending such amount of time inside water. Once out of water, clock is still ticking. Rushing to the transition area and putting on the gear for cycling as quickly as possible. The time taken at the transition point also adds up to the overall race completion time. So, it is necessary to use this time efficiently. The neck and the back aches. But you have to quickly hit the road with your bike.



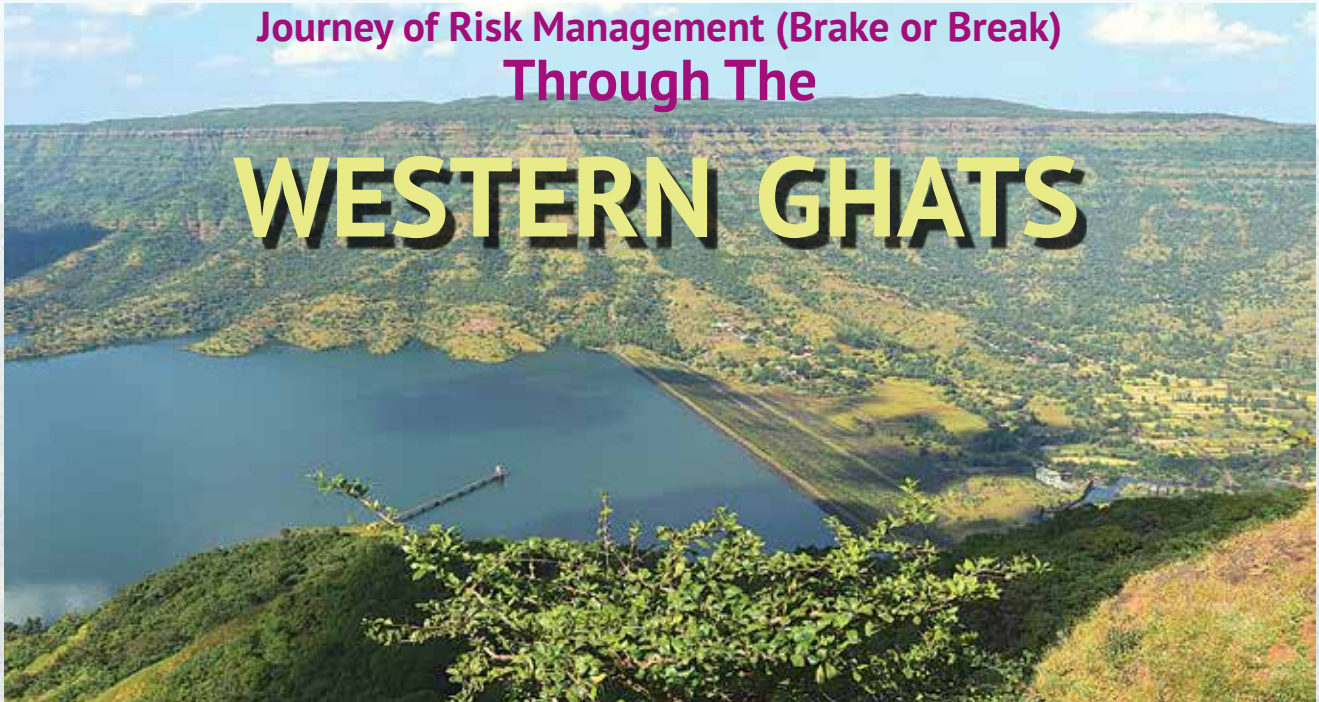
The cycling in these races are again far different from leisure cycling. The cycling leg takes place on national highways and is not a straight road and full of elevations and rolling hills. The speed and gears have to be managed according to elevation along with an eye on traffic. By the time the bike leg starts the legs are already fatigued because of swimming. Also, by the time the weather becomes sunny. So, one has to ensure that we don't drain out on energy or electrolytes and hence have to keep fuelling oneself with energy gels, water, electrolytes, salt

caps etc. And as soon as the bike leg concludes and we start to think we are 70% through the race, and the run leg seems pretty achievable, you realise the legs are at the state of giving up because of all the swimming and bike riding. One may have run such a distance several times as part of individual runs during practice. But after giving your everything in a race and the coming to the concluding part where the legs actually feel the burn of the previous activities, is totally a mental game. The sun is at its best at this part of the race. This is the part where one has to start digging inside to find that grit and determination to understand that you have what it takes to finish this race. We have been mentally trained all our life that we can only do this much with our body. In these activities even 1-2 km seem like it has been forever, the body always says no and is ready to give up. One has to dig in deep mentally and find that energy and focus to understand that this is achievable and today is not the day to give up. Slowly as we find our rhythm, you feel as if that aching ankle, those heavy legs have been part of you forever. The TRIATHLON is an event where the mind wins the battle, not the body."

Ms Juhi had also completed 42km Tata Mumbai Marathon in January 2019. She plans to participate in "Ironman Goa 70.3" which will be held in Oct 2020. We congratulate Ms.Juhi on her wonderful achievement. It's really heartening to know that our own staff member is participating in a high endurance sport like the Triathlon and doing well. Kudos and best wishes. ■

Journey of Risk Management (Brake or Break) Through The

WESTERN GHATS



The title of the article appears to be like any other topic in Risk Management; boring, uninteresting and non-intuitive (may be subtitle would be of some help). But this it is not just about risk management, rather it is more about a journey. Like any other journey, it requires preparedness, plans, travel routes with mesmerizing views, pit stops with cup of chai and at the end some beautiful memories as we reach destination.

The journey is about one of the most beautiful hill-stations near maximum city of Mumbai; Mahabaleshwar. Mahabaleshwar to the people of Mumbai means many things like a cold place where winter exists all the time, a respite from hot and humid weather but for most it means a place from where all the Strawberries are sourced. Journey to Mahabaleshwar takes about 5-6 hours which involves steering through some of the majestic hills of Western Ghats and leaving behind spots like Lonavala/Khandala.

Thereafter, crossing equally if not less beautiful Panchgani which reminds me of Aamir Khan right since the time of 'Jo Jeeta Wahi Sikander' to more recently Darsheel Safari starrer 'Taare Zameen Par'. The roads are well maintained by NHAI, partly from the tolls which we have to pay. Tolls are not liked by any of us. So is Risk Management as there does not exist any apparent reason to like Risk Management. To

many of us, risk management means statistics, models, data, policies and above all it means putting Brakes.

Coming back to journey, any Mumbaikar would vouch that it is best to leave early in the morning to avoid city traffic. In the group of 4 people that we were, none of us liked to have outside food very often. Though everyone of us enjoyed Tea en route. So, we kept some freshly prepared Sandwiches, some healthy snacks like sprouts, Salads etc. As the person on the driving seat, I was required to take care of our vehicle, the ever dependable 2013 make Volkswagen Polo. Overnight I got fuel tank full and got checked the air pressure. Brakes were working fine.

So, this part of the journey is called planning. To ensure we have sufficient resources to reach the destination. It is like estimation of our business targets vis-à-vis resources that we have with us to achieve those targets. In Risk Management this part is conceptualized and recorded as **ICAAP (Internal Capital Adequacy Assessment Program)**. The ICAAP document involves aggregation of business plan based on realistic assumption of available resource i.e. capital. ICAAP also involves the results of various stress tests carried out, to ensure the resources are sufficient to cover up for stresses in the business. As at the time of packing our bags, one of our friends suggested that we should carry some medicines also.



As planned, our journey commenced early in the morning. With the sun rising on the east, we embarked on our journey.

After crossing the city borders and paying hefty tolls, we decided to take a tea break. Journey thereafter was smooth and fast. Driving through the 4 lane Mumbai Pune highway is like a cakewalk or at-least as it appears to be like. It is like only you are driving with ease and no one is around there to create any kind of difficulty. The road is clean and beautiful as long as you can see. While your eyes stray off the road you are greeted by the beauty of nature.

But all of a sudden with a loud honk, there rushed a bullet-like BMW from the left side of my car and barged into the divider on the right side. A mild left taper coupled with controlled brakes before finally putting a powerful brake ensured that the upside down BMW remained far away from us. The scene turned out to be a horrific situation from a pleasant drive. That rash drive reminded me of something called a **market risk** event. Like market risk has put a full-stop in many of the international banks (Barings bank being most infamous example), that event could have well been a full stop of our journey. Like risk of an accident on highways, market risk is also more given than taken and it comes so fast that sometimes it strikes even before we realize it. We have very little control on such factors. It was not the end. Further, after the accident all of cars running on highway got affected something like a **contagion effect**. The whole

road gets blocked affecting every single traveler- reminds us of **systemic risk**. In such events, an alert, active and swiftly acting driver can steer through.

Moving ahead of that little shocker, we went past the beautiful hills of Lonavala and further crossing outskirts of Pune city and then reaching all the way to Wai. From there onwards the drive was an uphill task, quite literally. We were prepared mentally that the twisted and curled drive along the ghats are expected to be slow. Therefore, we had some soothing and relaxing music from yesteryears going along us. Songs featuring voices of greats like Md Rafi, Kishore Kumar, Manna Dey, Lata Mangeshkar and Asha Bhonsle and composed by some of the best industry has ever got like S D Burman, Khayyam, Salil Chaowdhary et al. Alongside were again the beauty of today soaked in bright sunny day. The nature trail of Western Ghats is so spectacular that putting concentration on road is sometimes difficult. Nevertheless, the eyes on road and target on mind, we were to get through the monumental task.



Driving through, it was realized that how close the issue is to our banking industry. Like this mountain, the unending issue of worsening asset quality has put on brakes to our growth story. So, as some senior and experienced drivers have told me, I also slowed down the speed of car and put the car to 2nd and 1st gear. By doing this, the energy of car gets to focus on generating enough power that it can seamlessly go up the 45° steep slope. The speed of the car is not the priority as all the focus should be power enough to steer through the hilly task. This slow but high energy drive reminds us of Elephant walk. Sometimes, slow but steady, consistent and concentrated journey is the need of the hour. The combination of brakes and gears are more important



to maneuver through the way. Suddenly the importance of risk management in putting brakes started making more sense. The issue of rising NPAs requires some brake, focus, attention and devoted energy. Moving ahead, the mountain hill was finally conquered. And then everybody was happy to take some view from the top as we reached for another tea break.

The downhill brought automatic speed in the car and then we were high with enthusiasm and energy. The car was ready to speed up and make way ahead in the favourable condition provided by gravity. However, the curse of working in risk management does not intend to bring out the Michael Schumacher in me! Instead, I was reminded of those geniuses who taught me driving. I remembered them saying that the gear which is used to rise up the hill should be used to go downhill as well. Though it appeared to be counter-intuitive but when I actually felt that, the greater sense prevailed. The downhill appears to be easy as gravity allows you to reach higher speeds, but then there are twists and turns on the road. Even in case of straight downhill road, in eventuality of putting brakes, far more energy is required than in normal flat road. So, again, in case the car is to put brake, it is required that the car is on lower gear. Therefore, for risk management to work efficiently after the major challenge is over, a slow speed is necessary. To effectively set in the recovery in the organization, a slow but steady movement is all the more essential. Even though, risk management may appear to be only putting brakes when you should be driving fast reaching out newer horizons, the experiences tell us that steady ships only reach harbor.

After that the destination was close-by. We decided to check-in to the hotel and have our lunch. After the sumptuous and delicious lunch was served, we took a stroll across the road to see arrays of strawberry plants. Farmers were however unhappy due to extended rains this year. Due to which there has not yet been any harvest which is unusual. That was disappointing for us as well as we could only see the Strawberry plants.

Next we decided to go to Sunset point. It was targeted that we should reach there at least an hour before sunset time. However, due to lot of traffic and difficulty to find a place to park our car, we got little delayed. This part summarizes the importance of **Operational Risk**. We may never be able to appreciate OR when everything is normal. Every single step



we took in the standard way we were expected to, brought the result which was favourable. On the contrary, if we miss out on expected procedure either due to people or systems in place, the unfavourable situation we are in; is what is called as Operational risk.

As we approached the sunset point, the subtle orange painted sky on the dark blue background emerged behind a series of mountain ranges and that was a sight to behold.

Returning in dark, quiet and unobtrusive drive back to hotel



brought out an introspection about the day gone by and it became even more prominent that risk management is more about having a coordination between accelerator and brake. The constant, practically unidentifiable *jugalbandi* between the two brought to us the break we needed.

PS: Did I not talk about **Credit Risk**. Well, that's because I got share of each of our friends back. It could be either due to the fact that I had their luggage (collateral) in my car (pun intended)!

Mohd. Azaharuddin
Risk Management Dept.
Head Office





NRI meet conducted by Amritsar zone at Jaalandhar attended by ZM Shri Vasudev & DZM Shri K K Garg



बर्धमान अंचल - हर घर दस्तक - ऋण स्वीकृति पत्र प्रदान करते हुए आंचलिक प्रबंधक श्री आर के दाश और उप आंचलिक प्रबंधक श्री एस के दूबे



भागलपुर अंचल - समीक्षा बैठक में महाप्रबंधक उत्तर-II श्री बृज लाल और भागलपुर के आंचलिक प्रबन्धक श्री राजीव सिन्हा



Bubaneswar Zone- Customer Outreach program, ZM shri Y N Dwivedi handing over sanction letters to customers



भोपाल अंचल - स्टार महोत्सव में भाग लेते हुए कार्यपालक निदेशक श्री सी जी चैतन्य, महाप्रबन्धक श्री ए के जैन, आंचलिक प्रबन्धक श्री बिस्वजीत मिश्रा



बोकारो अंचल- कारोबार समीक्षा बैठक में महाप्रबंधक श्री आर के दाश, आंचलिक प्रबन्धक श्री धनंजय कुमार और उपआंचलिक प्रबन्धक श्री विक्रम सिन्हा

ZONAL ACTIVITIES



Chennai Zone - HAR GHAR DASTAK (05.12.2019). Executive Director Shri A. K. Das handing over sanction letters to customers. Shri R K Mitra General Manager NBG (South), Shri B.V.S. Atchutarao Zonal Manager and other dignitaries from Chennai Zone were also present.



ITTC Pune- Shri Prashant Naik General Manager, Learning & Development Department, Head Office, Inaugurated "All India training program of Officers" on "ADC, ITeS & Third Party Products". To his left is Shri P. Anbalagan, Principal ITTC - Pune.



देहरादून अंचल - ग्राहक को ऋण वितरित करते देहरादून अंचल के आंचलिक प्रबन्धक श्री भूपेश करौलिया, मध्य हरिद्वार रोड शाखा की वरिष्ठ शाखा प्रबन्धक श्रीमती ज्योति जोशी और सम्मानित ग्राहक



गाजियाबाद अंचल द्वारा आयोजित लोन मेला - आंचलिक प्रबन्धक श्री विवेकानंद दूबे और अन्य स्टाफ सदस्य



Goa Zone - GM Shri Ashok Pathak and ZM Goa Smt Sulabha Rathod felicitating Shri A.K.Das on his elevation as MD & CEO of our bank



हावड़ा अंचल - विश्व हिन्दी दिवस का आयोजन



हुब्लली शहर में राज्यस्तरीय फेस्टिवल का आयोजन किया गया, जिसमें बैंक ऑफ इंडिया हुब्लली - धारवाड अंचल ने अपना स्टॉल लगाया। फोटो में आंचलिक प्रबंधक श्री पी जी पप्पू और अन्य स्टाफ सदस्य



इंदौर अंचल - एमडी एवं सीईओ श्री ए के दास जी ने इंदौर अंचल का दौरा किया, इस दौरान उन्होंने वृक्षारोपण किया



जयपुर - श्री प्रसाद जोशी, महाप्रबंधक, प्रधान कार्यालय, सुश्री अंजलि भटनागर- आंचलिक प्रबंधक, जयपुर में ग्राहकों को ऋण स्वीकृति पत्र प्रदान करते हुए।



Keonjhar Zone- विश्व हिन्दी दिवस का आयोजन



Kerala Zone - financing of solar powered vehicles under NULM. ZM Shri Mahesh Kumar handing over sanction letter.



Kolkata Zone - Avantipur branch inauguration & loan sanction letter distribution by ZM Shri R. K. Hota

ZONAL ACTIVITIES



लखनऊ अंचल के दौरे पर आए मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री देवेन्द्र शर्मा सभी स्टाफ सदस्यों को संबोधित करते हुए



मुजफ्फरपुर अंचल - न रा का स मुजफ्फरपुर की बैठक के उद्घाटन समारोह में आंचलिक प्रबन्धक श्री नकुल बेहरा



लुधियाना अंचल - कार्यपालक निदेशक श्री सी जी चैतन्य जी का लुधियाना दौरा, साथ में एनबीजी उत्तर - 1 के महाप्रबंधक श्री एस के स्वाई और आंचलिक प्रबंधक श्री कुलदीप ज़िंदल



STC Noida - Workshop on PFMS (Public Financial Management Solution) of Govt of India; GM, HO GBD Shri S.K.Verma & Principal Ms. Mamata Bhat



Mumbai South Zone - HAR GHAR DASTAK - ZM Shri Hanwant Thakur handing over loan sanction letters to customers.



लखनऊ अंचल - कार्यपालक निदेशक श्री दामोदरन एन का स्वागत करते हुए महाप्रबंधक श्री बृज लाल



नवी मुंबई अंचल - रायगड प्रॉपर्टी एक्सपो में बैंक ऑफ इंडिया नवी मुंबई अंचल के स्टॉल में आंचलिक प्रबन्धक श्री विश्वजीत सिंह और अन्य स्टाफ सदस्य



पटना अंचल - संविधान दिवस का आयोजन, संविधान की प्रस्तावना का वाचन करती राजभाषा अधिकारी श्रीमती ज्योति मेहता



Pune Zone - Hon'ble President of India shri Ram Nath Kovind visiting BOI stall at NIBM



रायगड अंचल - विश्व हिन्दी दिवस का आयोजन



Rajkot Zone - Har ghar dastak GM Shri P.K.Sinha handing over sanction letters to customers



रांची अंचल- विश्व हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित प्रतियोगिता के विजेता छात्राओं को पुरस्कार प्रदान करते हुए राजभाषा अधिकारी श्री संजय कुमार सेन

ZONAL ACTIVITIES



Baroda Zone – NRI meet at Surat attended by ZM Shri Anil Jadhav & valued customers of the zone.



सोलापुर अंचल - विश्व हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में सोलापुर विश्वविद्यालय के उप कुलपति श्रीमती मृणालिनी फडनविस को सम्मानित करते हुए आंचलिक प्रबन्धक श्री अजय कडु



NEWDELHI ZONE-NRI MILAN SAMAROH Dr.Dnyaneshwar Mulay, Retired IFS Officer, GM North-1 Shri S K Swain, ZM New Delhi, Sh.Arvind Kumar and Branch incumbents were present.



नवी मुंबई अंचल - मेगा ग्राहक मिलन कार्यक्रम में महाप्रबंधक श्री अशोक पाठक और आंचलिक प्रबंधक श्री विश्वजीत सिंह ने ग्राहकों को संबोधित किया।



Inauguration of newly renovated auditorium at MDI by MD & CEO Shri A. K. Das in the presence of ED Shri C. G. Chaitanya



INAUGURATION OF New Health club at Mumbai South Zone by GM NBG West-1 Shri Ashok Pathak. ZM Shri Hanwant Thakur & DGM (Audit) Mrs Anitha Devi Kolapuram are also seen.



Head Office - Inauguration of Movie on Vigilance Awareness by Shri G. Padmanabhan, Chairman



Head Office - Integrity Pledge being taken by top executives



Guwahati Zone



Antwerp (Belgium) Branch



Bhubaneswar Zone



Jaipur Zone

VIGILANCE AWARENESS WEEK



Kanpur Zone



Kerala Zone



Management Development Institute



Muzaffarpur Zone



Navi Mumbai Zone



NBG Central



Bardhaman Zone



Mumbai North Zone

INAUGURATION OF VIJAYAWADA ZONE



Inauguration of newly formed Vijayawada Zone on 20.01.2020 in the presence of Shri C G Chaitanya, Executive Director, Shri A MD Imtiaz, District Collector and Magistrate of Krishna District, GM NBG South Shri R.K.Mitra and ZM Shri V.V. Somasekar.



Goa Zone donated a T.V for the patients at Dilasa (a unit support by IMA) and also an incinerator for disposal of Medical pads and CADD pump for patients.



Solapur Zone donated Laproscopic machine to Solapur Govt Medical College & Hospital under CSR. GM NBG West-2 Shri R. C. Thakur and ZM Shri Ajay Kadu were present during the function



Free Health Check Up Camp for under privileged persons at Ghatkopar by Navi Mumbai Zone



जनशक्ति -जलशक्ति - देहरादून अंचल ने उत्तराखंड पेयजल निगम के सहयोग से केवी-अपर कैम्प में जल संरक्षण हेतु जागरुकता कार्यक्रम का सफल आयोजन किया।



Goa Zone provided a Water Filter and Cooler to Sneh Mandir (Old Age Home).



Tree plantation at ITTC Pune by Shri Prashant Naik, General Manager (L&DD). Principal Shri P. Anbalagan & other staff members were also present

MAKING OF A BRAND

Nowadays it has become a fashion to appoint brand ambassadors not only by the commercial establishments but also by certain state governments and for this purpose they are engaging big celebrities. Though this phenomenon appears to be very new but that is not so. In fact only the nomenclature has changed but the things remain the same. Few years back they were called goodwill ambassadors and before that Goodwill messengers. Perhaps the word messenger was not having grandeur therefore slowly and slowly the word brand ambassador came into vogue.

Frankly speaking my concept of making a brand ambassador/ goodwill ambassador/ Goodwill messenger, by whatever name you call it, is quite different and to bring home the point I would like to narrate the real life episode which happened some 30 years back. At that time I was in charge of the legal department of our Uttar Pradesh zone at Lucknow and my another senior colleague now late Capt P.K.Pandey was the chief officer of A & S department. On a very hot summer day an aged senior citizen came perspiring and asked whether it was legal department of the bank. I answered in affirmative, then he told me that he had a complaint/problem to be discussed. Looking at his condition, that he was very tired and perspiring, I told him that he should first sit down, have a glass of cold water followed by tea and then we would discuss his complaint/problem. Once he cooled down, I asked him about his complaint. He told me that he was a pensioner and that there was a problem in his PPO and he was not getting proper response either from the branch or the concerned department and was made to run from pillar to post. Ultimately he had come to me. I informed him that legal department was not dealing with pension matters. On hearing this, he immediately got up and curtly asked me then where he should go? I told him he need not go anywhere, requested him to sit down and told him that I would enquire and let him

know the exact position. I made necessary enquiries and ultimately satisfied him that now his papers would be moving properly and his work will be done within a few days. Then he asked when he should come again? I then told him, that being such a senior citizen, he need not come again and again. He can simply phone and ask the latest position. He was very happy and satisfied and started blessing me profusely as an elder person and also praised the Bank that in this Bank good work culture is there and revealed a very startling fact that he was the brother-in-law of Capt. P.K.Pandey, the then A & S chief of the Bank. Then I asked him why he has not approached him or at least revealed it earlier. On this he told me that he wanted to check himself as to whether any work is done or not in this Bank without any source and now I am sure, he is more than satisfied and he would spread the message to all the persons who would come in his contact.

That was the occasion that a first brand ambassador/ goodwill ambassador/ Goodwill messenger was created/ made by me and thereafter I have tried this experience/ formula throughout my career by serving the people in distress, particularly senior citizens, be they our ex-staff or otherwise. Now coming to the basic point, if this way we are creating/making brand ambassadors, in my personal opinion this is a better and effective way of making them instead of engaging a big celebrity for the purpose by incurring huge expenses.

In the end I appeal to all the present and ex-employees of the Bank to create as many Brand Ambassadors in the aforesaid manner so that our esteemed organization prospers further and achieves new heights surpassing all its competitors.

(Arun Kumar)
Dy. General Manager (Retd.)



वारली चित्रकला

वारली चित्रकला
सह्याद्री पर्वतशृंखला
के उत्तरी भाग में
रहनेवाली वारली
जनजाति की देन है।



ता रांगण के इस अंक के मुखपृष्ठ पर जो पेंटिंग प्रदर्शित किया गया है वह 'वारली चित्रकला' का एक सुन्दर प्रदर्शन है जिसे हमारी अंबाजोगाई शाखा (सोलापुर अंचल) के स्टाफ श्री दीपक बंडगर ने बनाई है। श्री दीपक को वारली चित्रकारिता में महारत प्राप्त है। उन्होंने इस विशिष्ट कला का प्रदर्शन करते हुए कई पेंटिंग बनाई हैं।

वारली चित्रकला क्या है

वारली चित्रकला सह्याद्री पर्वतशृंखला के उत्तरी भाग में रहनेवाली वारली जनजाति की देन है। इस वनवासी जनजाति के अधिकांश लोग महाराष्ट्र के पश्चिमी तटपर स्थित पालघर जिले में तथा उसके आसपास बसे हुए हैं। 'वारली' शब्द 'वारला' से उत्पन्न हुआ है जिसका अर्थ है 'जमीन अथवा क्षेत्र का टुकड़ा'।

इस कला का प्रारंभ कब हुआ इसका कोई निश्चित समय नहीं बताया जा सकता, पर दसवीं सदी ई.पू. के आरम्भिक काल में इसके होने के संकेत मिलते हैं। एक धारणा यह भी है कि वारली परंपरा 2500 ई.पू. और 3000 ई.पू. के बीच में प्रारंभ हुई। वारली लोग यह चित्रकारी मिट्टी से बने अपने कच्चे घरों की दीवारों को सजाने के लिए करते थे।

बाहरी दुनिया को वारली चित्रकला कला के बारे में पहली बार 1970 के दशक की शुरुआत में पता चला। तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी ने भारतीय हस्तकला को बढ़ावा देने के लिए कुछ योजनाएं शुरू की थी। इन योजनाओं में कारीगरों तथा कलाकारों की खोज करने वाले भास्कर कुलकर्णी जी की मुलाकात जिव्या सोमा म्हसे (मशे) नाम के चित्रकार से हुई जिन्होंने इस चित्रकला को अपने बचपन से ही संजोना शुरू किया था। इस कलाकार को भारत सरकार ने राष्ट्रीय पुरस्कार तथा पद्मश्री जैसे पुरस्कारों से सम्मानित किया। देशविदेश में इस कला को पहुँचाने में इस कलाकार का अमूल्य योगदान रहा है।

वारली मुख्य रूपसे कृषि पर निर्भर रहनेवाली जनजाति है। इनके घर बाँस, लकड़ी, घास एवं मिट्टी से बने हुए होते हैं। घर की छत ताड़ के पत्तों तथा धान के तनों से बनी होती है। घर की दीवारें लाल मिट्टी एवं बाँस से बांध कर बनाई जाती हैं। इन दिवारों पर लाल मिट्टी और गाय के गोबर से बने मिश्रण की लिपाई से भित्ति चित्रकारी के लिए गेरू लाल पृष्ठभूमि का निर्माण होता है।

इन चित्रों के लिए केवल सफ़ेद रंग का उपयोग किया जाता है जो मिट्टी की पृष्ठभूमि के रंग के विपरीत है। इस चित्रकारिता में चावल की लई और पानी के मिश्रण से सफ़ेद रंग बनाया जाता है जिसे गोंद जोड़ती है। बाँस की एक छड़ी के सिरे को चबाकर उसे नरम बनाकर तूलिका के रूप में प्रयोग किया जाता है।

यह चित्रकारिता महाराष्ट्र की वारली जनजाति की रोजमर्रा की जिंदगी, लोक कल्पनाओं, रीति-रिवाजों और सामाजिक जीवन का सजीव

चित्रण है। इसमें अधिकांश चित्र ज्यामितीय आकार जैसे की वृत्त, त्रिकोण, वर्ग, बिंदु तथा रेखाएं इत्यादि का उपयोग करके बनाए जाते हैं। ये सादगी भरे चित्र वारली लोगों का प्रकृति के प्रति प्रेम तथा आदर भाव दर्शाते हैं।

इनमें से कुछ चित्र विवाह तथा तारपा नृत्य (तारपा वाद्य के साथ किया जानेवाला स्थानीय नृत्य) के विषय में है। प्रत्येक अनुष्ठान चित्रकला का केंद्रीय विचार वर्ग है जिसे "चौक" या "चौकट" के रूप में जाना जाता है। यह चौक ज्यादातर दो प्रकार के होते हैं: लग्नचौक और देवचौक। इस चौक के अन्दर के अंदर उर्वरता का प्रतीक देवी "मां पालघाट" को और दूल्हा, दुल्हन, घोडा आदि के साथ विवाह प्रसंग को चित्रित किया जाता है। ये चित्र पवित्र माने जाते हैं। वारली कलाओं के प्रमुख विषयों में शादी का बड़ा स्थान है। वारली चित्रों में पुरुष देवता अप्रचलित है तथा उनका संबंध उन आत्माओं से माना जाता है जिन्होंने मानव रूप धारण किया है।

इन चित्रों में शिकार, मछली पकड़ना, खेती करना, त्योहार, नृत्य, नदियाँ, पहाड़, पेड़, पक्षी, पशु इत्यादि चित्रित किये जाते हैं। आज कल इन चित्रों में कुछ आधुनिक तत्व जैसे साइकिल या ट्रांजिस्टर भी शामिल हैं, जो चित्रों के कोनों में दिखाए जाते हैं।


वारली चित्रकारिता एक पारंपरिक ज्ञान, सांस्कृतिक तथा बौद्धिक संपदा है जो पीढ़ियों से संरक्षित रही है। आदिवासी युवा सेवा संघ ने बौद्धिक संपदा अधिकार अधिनियम के तहत वारली चित्रकारिता को भौगोलिक उपदर्शन (Geographical Indication) के साथ पंजीकृत कर लिया है। इस कला को सामाजिक उद्यमिता से जोड़ने तथा इससे जुड़ी अर्थव्यवस्था को स्थायी रूप से मजबूत करने के लिए विभिन्न प्रयास जारी हैं।



महेश विद्याधर मोहरे
मानव संसाधन विभाग
नवी मुंबई आंचलिक कार्यालय



स्टार परामर्श विजेता Star Paramarsh Winners

क्र.	विजेताओं के नाम	सुझाव का विषय	पुरस्कार
नवम्बर, 2019			
प्रथम एवं द्वितीय पुरस्कार के लिए कोई भी सुझाव योग्य नहीं पाया गया।			
1.	श्री पंकज एस. पाटिल (180640), जलगांव शाखा, पुणे अंचल  Pankaj S. Patil (EID: 180640), Jalgaon Br., Pune Zone	फिनेकल में UIDMAP मेनू - हम जब CUMM को संशोधित करते हैं, सत्यापित करते हैं तब हम UIDMAP में प्रवेश करते हैं और उसे सत्यापित करते हैं। लेकिन कई बार UIDMAP सत्यापित करते समय घातक (Fatal) त्रुटि देता है। कृपया UIDMAP की प्रक्रिया को सुचारू करें। सभी दिशानिर्देशों के अनुसार काम करने के बावजूद, हम UIDMAP में प्रविष्टियों को सत्यापित करने में असमर्थ हैं। यह घातक त्रुटि (FATAL ERROR) देता है। फिर हमें डेटा सेंटर, कॉल लॉज, फॉलो अप करना पड़ता है। फिर 2-3 दिनों के बाद डाटा सेंटर यह सत्यापन की अनुमति देता है। तब तक हमें ग्राहकों के क्रोध का सामना करना पड़ता है। UIDMAP menu in finacle. - We modify CUMM, verify and then enter UIDMAP and verify, but many a times it gives fatal error while verifying. Please smoothen the process of UIDMAP. Even when going by all guidelines, we are unable to verify the entries in UIDMAP. It gives FATAL ERROR. Then we need to call data center, lodge call, follow up and then after 2-3 days, it allows verification. Till then we face wrath of customers.	तृतीय पुरस्कार Third Prize



“Relevance of Economics”

Philosophy of Economics

Mr. Hemant Kolhapure, Asst.General Manager & Principal STC Goa had presented a paper on the subject of “Relevance of Economics” section of “Philosophy of Economics” in the session of the “World Congress of Philosophy 2018” at Beijing on 15th August 2018 which deals with the Economists failure to predict, diagnose and prescribe the solutions to the Economic turmoil of 2018 and to stall the spiraling recession world over. He is a life member of Indian Philosophical Congress & in August 2013 he had attended & presented a paper on “Business Ethics” at Athens, Greece in the World Congress of Philosophy session. His efforts to investigate the genesis of the immoral behavior in human beings were very much appreciated.

Excerpts from his paper on the subject of “Relevance of Economics” section of “Philosophy of Economics” are enumerated here.

Abstract

Against backdrop of the great financial recession of 2008 relevance of Economics again came to forefront, despite unprecedented monetary stimulus world economy has not come out of stagflation. A bust is certain everywhere. The international monetary system has collapsed three times in past hundred years. Exploitative capitalism, Inequality & ecological imbalance has threatened sustenance of civilization. Why the economists failed to preconceive and diagnose maladies. There are certain flaws in economic theory. Economic theory is proto-theory, which is not fully falsifiable, but which yields falsifiable results if appropriate methods, or a method-theory is not applied to it. Scientific method applied in science is ineffective in economics, because it deals with the complex system of human being, who is variant, irrational, susceptible therefore making inference & prognostication on the basis of extrapolation gets entrapped in fallacy. Application of Deductive and inductive logic can't make

the future anything but makes the logical extension of the past and what occurred in the fall of 2008 simply wasn't a logical extension of the past. With appropriate methodology, interdisciplinary orientation economists can address systemic failures, rationalising human psyche, ethos, greed, inheritance laws, curtailing dependence on money, to create sustainable & egalitarian economy.

Main Paper

RELEVANCE OF ECONOMICS

On January 17 1997 eminent Economists gathered in Stanford University to discuss the Relevance of Economics on the background of an article published in New Yorker titled The Decline of Economics. They were Stanford Nobelist Keneeth Arrow, Stanford economists David Starrett, James Sweeney, Tibor Scitovsky, John Lipsky Victor Fuchs, Princeton's Ashenfelter formerly of IMF and concluded that Economics has become too technical, mathematical, theoretical, politicised; they do not have any consensus about how economy works. There are some flaws in theory which is revealed through its practise. Economics is an imperfect science. Economic theory built on rational expectations and equilibrium used by Central Banks and Govt agencies have a significant bad impact. What we expect from economics? Marshall & Robins “choices for optimum use of the scarce and substitutable resources for production, consumption and distribution”. For what purpose? to create an egalitarian human society wherein, equal right over natural resources not only to satiate basic survival needs like food, shelter but to have qualitative life by multifarious alluring products & amenities which modern technology have facilitated, enabling equal opportunity for optimisation & actualisation of capabilities by education to gain a space in system. But it is proved to be myth as there are 3.6 billion people around the world aspiring to income,

to food on the table twice a day, once a day and contrary one percent elites are owning 90 % of assets of the world. The several decades of extractive capitalism have fuelled extreme wealth and racial inequality, democratic demise, and brought us to the brink of ecological ruin.

One of the central tenants of economics is that given certain conditions , self-interested behaviour by individuals leads them to the social good, almost as if orchestrated by an invisible hand. However, over the past two centuries , this proposition first put forth by Adam Smith has been taken out of contest , contorted, and used as the cornerstone of free market orthodoxy and has hampered our understanding how economy functions. Comparing this view of the invisible hand and rational behaviour to the vision described by Kafka --- in which individuals pursuing their atomistic interests, devoid of moral compunction , end up creating a world that is mean and miserable. Economics lost human touch when it tried to be rational and objective.

Economists & Theories Flaws: Mysterious human nature interwoven in evolving complex systems is limiting perception of nature of Real economy, genesis of its problems & lacks imagination to diagnose it. Following are the flaws erupted in evolution of Economics.

Methodology & Orientation: Economics is a sub discipline of social science alongside history, sociology, anthropology, and political science. Picketty dislikes to mention it as “economic science” as it suggests that economics has attained a higher scientific status than the other social sciences. Economics has yet to get over childish passion for mathematics which is easy way of acquiring the appearance of scientificity and for purely theoretical and often highly ideological speculation , at the expense of historical research and collaboration with other social sciences. He prefers to express it as “political economy” which seems old fashioned but which differentiates it from other social sciences and denotes its political , normative, and moral purpose; it has alienated from its purpose and resultantly has lost relevance and vibrancy.

Greed: The elemental genesis of worldwide suffering is the exercise of human greed, acquisitiveness, and self-indulgence catastrophic worldwide epidemic of greed lies in evolution of money. greed is the direct outcome of dissatisfaction, emptiness, and discontentment threatens



ecosystem & reason of personal disorders Freud and Maslow identified greed as a mental disorder and strongly correlated greed with narcissism and meta-pathology. The World Economic Forum in 2014, lists 31 global risks in five areas - economics, geopolitics, environment, society, and technology, these risks are directly or indirectly correlated to human greed and self indulgence. Capitalism, which is driven by self-interest and the quest for profits, favours the use of a barrage of advertising for goods and services that could lead to high competition, envy and acquisitiveness. Mother Nature’s child endangered existence by ravage exploitation. Mafias are controlling the natural resources by holding social & political system at ransom; parallel economy is out of economists preview.

Cognitive Impulses: World Bank carried out a study to find out causes of failure of the development programmes in various countries and concluded that failure is due to the cognitive impulses resulting in cognitive biases of the planners , economists and bureaucrats created gaps between perception and implementation of the policies. They also lacked imagination to diagnose the economic upheavals. The Behavioural studies of irrational biases in non-human primates are useful to assess human irrational behaviour/ choice errors to curtail errors in economic judgements.

Systems Improprieties: Economic system is a system of production & distribution, internecine relation of ownership & relationship of production, sustained by legal & political system. Primitive, agricultural merchant, industrial, state, financial, imperialistic capital systems have modernised grief. Economists should properly diagnose the genesis of failures of these systems including Marxist & capitalist systems in achieving human welfare.

Trade-An Amoral proposition: The evolution of trading

is one of the most significant factors in the journey of mankind. Gaps between commodity-consumer & demand-supply is genesis of exorbitant profits manoeuvred by traders. Prices of the factors of production are determined by supply and demand. Speculation is base of trade & often associated with economic bubbles & bust, when price for an asset exceeds its intrinsic value. Speculative bubbles are essentially social epidemics whose contagion is mediated by the structure of the market financial crisis since the tulip mania of the 1630s to financial crisis of 2008. Metaphor of Money metamorphosed in derivatives, crypto currency has greased capitalism.

Patrimonial Capitalism: The rise in prices of inherited wealth crates bubble of growth & widens inequality resulting in social unrest and political instability world over. We have not modified the deep structures of capital and inequality. The rate of return on inherited properties is exceeding the rate of return on real sector. Pickety suggested to levy inheritance tax.

Fiscal Policy/ Monetary Policy: If fiscal policy is in a muddle, so is monetary policy. State controls demand & supply of money for attaining equilibrium, switched to managing deficits and economic growth, entrapped in stabilising market. Its effectiveness depends upon Elasticity of demand & supply of money to the real sector. The welfare of this enormous gravy train depends, in large part, on instability. The idea that we are rebalancing the economy is an illusion. It is impossible to create stable, balanced economies when vast interests within them have every incentive to drag them into instability and imbalance. Banks & planners have failed to understand nature of money.

Value and Money: After the domestication of cattle & the start of cultivation of crops in 9000-6000 BCE necessitated dependence resulting evolution of money, in the form of livestock, plant, metals, cowry etc., presently paper money, credit, derivatives, crypto currency etc. Money derives its value through universal acceptance, trust, confidence & state support which are not eternal but shaky. Money has extrinsic value; manipulated by Central Bank. Whereas intrinsic value of commodity is alienated by demand & supply forces. This paradox creates a flux in values of money and commodity, which is culminated in creation of flux on macro level between Monetary system and real system. Governments & Central Banks tries to

manoeuvre price of money by controlling its demand & supply to achieve equilibrium state out of inflationary or deflationary cycles, but they have failed. Monetary policy cannot solve systemic problems. A capitalist economy is inherently a monetary economy which behaves by the limitations on economic transactions created by radical uncertainty. Economic failures of modern capitalist economy stem from our system of money and banking.

Present Challenges : Before the Great Depression of the early 1930s, central banks and governments saw their role as stabilizing financial system and balancing the budget. After the Great Depression attention turned to policies aimed at maintaining full employment. But post war Keynesian ideas of public spending to expand public demand in the economy will also prove to be naïve. The use of expansionary policies during the 1960s exacerbated by the Vietnam War, led to great Inflation of the 1970s, accompanied by slow growth and rising unemployment – the combination known as stagflation. 1990s saw era of growth with low inflation. Then came the collapse of the industrialised world's banking system in 2008, the great recession that followed, and increasingly desperate attempts by policy makers to engineer a recovery. The international monetary system has collapsed three times in the past hundred years. The US dollar has been the global reserve currency since the end of the Second World War. The EU, USA, China & Japan constitute a global Gang of Four that comprises 65% of the world's economy. As China heads for a hard landing, US is stuck in low gear, Japan endures its third decade in depression, and Europe muddles through a structural adjustments. The Russian economy is best understood as a natural-resource extraction racket run by oligarchs and politicians, Brexit, Trump and rise of nationalism world over signifies downturn of Globalisation cycle revealing local interests (employment) and internal stability (protectionism) is prime over ideal internationalism. Globalisation be safeguarded with just regulations making it safe, fair & equitable. Ten years on, the lessons of the Great Recession fade, Greed drowning Fear. Many busts are caused by central banks tightening money. Now we have the opposite the greatest flood of money ever created, estimated at over \$10 trillion. Sovereign debts have multiplied by 300% of GDP, fearing plunge in debt driven growth, liquidity delusion, sovereign defaults

& bankruptcy. Huge bubble occurs when three things happen simultaneously. One, the arrival of an exciting new “disruptive technology”, like electric cars, hyperloops, artificial intelligence, net markets, having huge potential, second is easy massive cheap market liquidity, third is cheap credit. Implicated in financial war using derivatives, penetration of exchanges to cause havoc, using hedge funds, cyber attacks, incite panic and ultimately disable an enemy's economy. The future international monetary system will not be based on dollars because China, Russia, oil-producing & emerging other countries wants to end US monetary hegemony. Trickle-down economic policy failed, we urgently need a clearly articulated theory and practice of sustainable economics that works for local communities, a new values-based system that supports social and environmental balance and the creation of meaningful wealth. Arnold Toynbee's work on rise & fall of civilisations we can state that whenever an economic paradigm is unable to provide useful answers to a periods biggest challenges , society will enter a transitional period in which sooner or later it replaces the existing logic and operating system.

References

1. Thomas Piketty - Capital in the Twenty-First Century.
2. Thomas Piketty- The Economics of Inequality.
3. Thomas Piketty- Chronicles On Our Troubled Times.
4. Ha-Joon Chang- 23 Things They Don't Tell You About Capitalism.
5. Mervyn King- The End of Alchemy.
6. James Rickards- The Death of Money.
7. Kenneth S. Rogoff- The Curse of Cash.
8. Dani Rodrik- Economics Rules The Rights And Wrongs of The Dismal Science.
9. Socialist Register 2016- The Politics of The Right. Edited by Leo Panitch and Greg Albo.
10. Robert L. Heilbroner- The Worldly Philosophers.
11. Charles S. Peirce- Selected Writtings.
12. China After 1978- Essays from Economic and Political Weekly.

Hemant Kolhapure

Principal,
STC, Goa



तुम चिराग़ हो जलते रहो

नज़र लक्ष्य पर रहे, गिरो और संभलते रहो।
हवाओं को ज़ोर लगाने दो, तुम चिराग़ हो जलते रहो।

जिस राह चलोगे मंज़िल को,
पत्थर भी होंगे उस पर काँटे भी,
कभी दूधिया पूनम रात भी होगी,
कभी अमावसी सन्नाटे भी,
ओझल न हो लक्ष्य दृष्टि से,
सतत निरंतर चलते रहो।
हवाओं को

असफलताओं के स्वान तुम्हें,
जब काटेंगे और नोचेंगे,
न लाना मन में कि जगवाले,
क्या बोलेंगे क्या सोचेंगे,
धरा में दबे नवांकुर जैसे,
फूलते रहो, फलते रहो,
हवाओं को.....

लगेगी ठोकर पाँवों में जब,
बहे न अश्रु, रोना नहीं।
और निकलेगा रक्त पाँव से,
किन्तु उसे धोना नहीं।
लगा माथे पर लाल रुधिर को,
विजय तिलक मलते रहो।
हवाओं को ज़ोर लगा ने दो, तुम चिराग़ हो जलते रहो।



आशीष कुमार श्रीवास्तव

वरिष्ठ प्रबंधक
राष्ट्रीय बैंकिंग समूह (मध्य)
अहमदाबाद



मन, वचन और कर्म में सुख-संतुष्टि के लिए आवश्यक है "स्व प्रेरणा"

यह बात कुछ दिनों पहले की है। मनोहर लाल सार्वजनिक क्षेत्र के प्रमुख बैंक की एक बड़ी शाखा के प्रबंधक हैं। जब मैं उनसे मिला, तो वे बहुत परेशान दिख रहे थे। मैंने उनकी परेशानी का कारण जानना चाहा तो कहने लगे - "अरे क्या बताऊँ गुप्ता साहब! आजकल बैंक मैनेजर का काम बहुत परेशानी का सबब बनता जा रहा है। काम का दायरा दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। कासा बढ़ाना, ऋण में बढ़ोतरी, ऋण को एनपीए होने से बचाना, एनपीए हो चुके ऋण की वसूली करना, वसूल नहीं हो रहे ऋण में सारफेसी की कार्रवाही, जहां बैंक के पास कुछ बंधक नहीं है, वहाँ कानूनी कार्रवाई और न जाने क्या-क्या। चलो इतना होता तो भी चल जाता, सरकार के तमाम कार्यक्रम जैसे 59 मिनट में एमएसएमई ऋण की स्वीकृति, जीवन बीमा, पेंशन योजना, दुर्घटना बीमा आदि-आदि। बहुत दबाव है काम का। और हर काम समान रूप से जरूरी है। और सच बताऊँ गुप्ता साहब, अब तो बैंक के मैनेजर की जिम्मेवारी सचमुच बहुत भारी लगने लगी है।"

मनोहर लाल जी की बात सुनकर मुझे बहुत हैरत हुई। मनोहर लाल जी का बैंक में अभी तक का रिकार्ड काफी अच्छा रहा है। पहले भी कई प्रमुख शाखाओं में वे प्रबंधक रह चुके हैं। और कुछ शाखाओं में बहुत अच्छा व्यवसाय और कार्य करके उन्होंने काफी नाम भी अर्जित किया है। फिर आज वे इतना बुझे हुए क्यों नजर आ रहे हैं। मैंने उन्हें अपने ढंग से प्रोत्साहित करने की कोशिश की। पता नहीं, मेरी बात उनके मन-मस्तिष्क में कहाँ तक पहुँच पाई! लेकिन वहाँ से जाने के बाद भी काफी समय तक मैं मनोहर लाल जी की स्थिति पर चिंतन करता रहा।

बहुत विचार करने पर मुझे महसूस हुआ कि मनोहर लाल जी में न केवल आत्मविश्वास कि कमी है बल्कि 'स्व प्रेरणा' का भी नितांत अभाव है। स्व प्रेरणा, आप भी सोच रहे होंगे कि मैं यह कौन सा नया शब्द ले कर आ गया हूँ। लेकिन मित्रों, इसमें कुछ भी नया नहीं है।

स्व प्रेरणा से आदमी में आत्मविश्वास का संचार होता है और इस तरह स्व प्रेरणा से पग-पग पर व्यक्ति को मार्गदर्शन मिलता है।

स्व प्रेरणा अर्थात् स्वतः प्रेरणा अथवा Self-motivation वास्तव में सफलता का मूलमंत्र है। इसके बल पर हम असंभव को भी संभव बना सकते हैं, और इसके अभाव में बहुत छोटा सा लक्ष्य भी दूभर लगने लगता है। स्व प्रेरणा से आदमी में आत्मविश्वास का संचार होता है और इस तरह स्व प्रेरणा से पग-पग पर व्यक्ति को मार्गदर्शन मिलता है। चलिये, हम इसे और स्पष्ट करते हैं। स्व प्रेरणा एक ऐसा मंत्र है जो वांछित परिणाम हासिल करने के लिए सतत प्रयास करने की ऊर्जा प्रदान करता है। कल्पना कीजिए, हमें कोई विशेष कार्य करना है। इस काम को करने के लिए क्या हम मन से तैयार हैं अथवा क्या हम इस कार्य को महज अपना कर्तव्य समझकर, बुझे मन से उस कर्तव्य का निर्वहन कर रहे हैं। स्व प्रेरणा से किसी भी काम को मन से करने की शक्ति मिलती है।

जहां तक प्रेरणा की बात है, किसी भी संगठन के कर्मचारी कई कारणों से अपने कार्य के लिए प्रेरित होते हैं- कोई आर्थिक प्रतिफल से प्रेरित होता है तो कोई दंड अथवा आलोचना से बचने के लिए। कभी कोई कर्मचारी अपने कार्य को एक प्रकार का आत्म-सम्मान समझता है और अपने काम को करते समय वह स्वयं को सुरक्षित और महत्वपूर्ण समझ कर प्रेरित होता है। और कुछ ऐसे कर्मचारी भी हैं, जो अपने कार्य को करते हुए सुख और संतुष्टि का अनुभव करते हैं। कारण चाहे जो भी हो, वास्तव में, किसी कार्य में सर्वाधिक उत्साह और सर्वोत्तम परिणाम उन्हीं कर्मचारियों को प्राप्त होता है, जो स्व प्रेरित होते हैं।

स्व प्रेरणा को किसी भी कार्य को करने या दायित्व वहन करने के लिए प्रेरणा का सर्वोत्तम गुणात्मक रूप माना जाता है क्योंकि इससे न केवल किसी कर्मचारी को अत्यंत सुखद अनुभूति होती है, बल्कि इससे कार्यस्थल में भी श्रेष्ठ एवं सुंदर माहौल बनता है। कर्मचारी पूर्ण सक्रिय होकर कार्य के परिदृश्य के अनुरूप स्वयं को ढाल लेते हैं, और अपने संगठन के उत्पादन में अधिकतम योगदान देते हैं। यदि लोग स्व प्रेरित हों तो इसका संगठन की उत्पादकता पर काफी लंबे समय तक अनुकूल प्रभाव रहता है।

प्रश्न यह है कि अपने कर्मचारियों में स्व प्रेरणा का वातावरण निर्मित करने के लिए संगठन किस रूप में प्रयास कर सकते हैं। वैसे तो यह बहुत हद तक संगठन की प्रकृति और उसकी कार्य-प्रणाली पर

निर्भर करेगा लेकिन यदि प्रबंधन द्वारा कुछ ऐसे सामान्य कदम उठाए जाएँ, तो वे निश्चित रूप से कर्मचारियों को स्व प्रेरणा की दिशा में प्रेरित कर सकते हैं। कर्मचारियों को स्व प्रेरित करने के लिए प्रबंधन द्वारा निम्नलिखित कदम उठाए जा सकते हैं:-

1. **कर्मचारियों को स्वतः** निर्णय लेने के अवसर प्रदान करना अथवा संगठन के निर्णयों में अपनी राय रखने के लिए उन्हें आमंत्रित करना;
2. निर्धारित संरचना और सीमाओं के अंदर उन्हें अपने स्वभाव के अनुरूप कार्य करने का अवसर प्रदान करना;
3. कर्मचारियों के दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए, उनके प्रति सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करना;
4. लक्ष्यों के प्रति कर्मचारियों में स्वामित्व की स्थिति और धारणा बनाना, और कार्यों की उपयोगिता की जानकारी देते हुए उनमें कार्य के प्रति लगाव और रुचि पैदा करना;
5. स्वत्वाधिकार को बाधित करनेवाले नियंत्रणों से बचना;
6. अपेक्षित कार्य-व्यवहार को प्रोत्साहित करने के लिए सहज स्वीकृति अथवा पुरस्कारों का प्रावधान

कई संगठनों में स्व प्रेरणा के निर्माण के लिए ऐसे अनेक प्रयास किए गए हैं। उदाहरण के लिए- 'नेटफ्लिक्स' में नेतृत्वकर्ताओं और पर्यवेक्षकों को इस बात को मानने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है कि कंपनी के कर्मचारी अपना सर्वोत्तम योगदान दे रहे हैं। साथ ही, नेटफ्लिक्स के कर्मचारियों को अपने कार्य के प्रत्येक स्तर पर अनुमोदन/मंजूरी लेने की बाध्यता नहीं होती।

मनोवैज्ञानिक स्कॉट गेलर ने किसी व्यक्ति में स्व प्रेरणा के परीक्षण के लिए एक सहज सूत्र अपनाने का सुझाव दिया है। स्वयं से निम्नलिखित तीन प्रश्न कीजिए-

1. क्या आप इस काम को कर सकते हैं ?
2. क्या इस काम से अपेक्षित परिणाम प्राप्त होगा ?
3. क्या यह कार्य इतना अधिक महत्वपूर्ण है ?

यदि किसी व्यक्ति का इन तीनों प्रश्नों के लिए उत्तर "हाँ" है, तो व्यक्ति के स्व प्रेरित होने की पूरी संभावना है।

क्या स्व प्रेरणा के लिए व्यक्ति स्वयं में कुछ कौशल विकसित कर सकता है ? इस प्रश्न का उत्तर है - अवश्य। कोई भी व्यक्ति नियमित और निरंतर प्रयास से ऐसे कौशल का विकास कर सकता है जो उसमें स्व प्रेरणा के बीज बो सकते हैं। ये कौशल हैं:-

1. हमेशा लक्ष्य उच्च रखें लेकिन वे वास्तव में हासिल करने योग्य हों।

कोई भी व्यक्ति नियमित और निरंतर प्रयास से ऐसे कौशल का विकास कर सकता है जो उसमें स्व प्रेरणा के बीज बो सकते हैं।

2. एक स्तर तक जोखिम उठाने के लिए तैयार रहें।
3. सुधार लाने के लिए निरंतर प्रतिसूचना (फीडबैक) प्राप्त करते रहें।
4. व्यक्तिगत और संगठन के लक्ष्यों के प्रति प्रतिबद्ध रहें और उनकी प्राप्ति के लिए अतिरिक्त प्रयास करें।
5. उचित अवसरों की ताक में रहें और अवसर मिलते ही उसका पूरा लाभ उठाएँ।
6. विघ्न-बाधाओं का सामना करें और बाधाओं के बावजूद अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते रहें।

इनके अतिरिक्त कुछ ऐसे उपाय भी हैं, जो व्यक्ति को स्व प्रेरित बनाए रखने में मदद कर सकते हैं:-

1. ज्ञानवर्धन करते रहें। हम एक अत्यंत गतिशील डिजिटल युग में रह रहे हैं जहां अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए निरंतर ज्ञानार्जन करते रहना जरूरी है।
2. अभिप्रेरित, उत्साही एवं सहायक लोगों के साथ समय व्यतीत करें।
3. सकारात्मक मानसिकता विकसित करें और आशावादी बने रहें।
4. अपनी शक्तियों और कमजोरियों की पहचान करें और उनमें सुधार के लिए प्रयास करते रहें।
5. टालमटोल की आदत से बचे रहें एवं समय प्रबंधन के अपने कौशल को विकसित करें।
6. जब अवश्यकता हो तो दूसरों से सहायता लेने में संकोच न करें और जब दूसरों को आपकी सहायता की जरूरत हो, तो उनकी सहायता जरूर करें।

ये बहुत छोटी-छोटी बातें हैं, और स्व प्रेरणा के महत्व को देखते हुए इनपर ध्यान देना बहुत कठिन नहीं है। और इन बातों से यदि आपमें स्व प्रेरणा का गुण विकसित हो जाता है, तो फिर अपने जीवन में फर्क देखिए। आपका व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन दोनों खुशहाल नजर आने लगेगा।

मृत्युंजय कुमार गुप्ता
महाप्रबंधक (सेवा निवृत्त)





Attukal Pongala

FROM THE LAND WHICH WORSHIPS THE LADY

Attukal Devi temple in Thiruvananthapuram (Trivandrum) and its rituals are recognized by the Guinness book of world records for the largest gathering of women devotees in the world on a single day.

Attukal Pongala - a festival that always carries to me the face of my mother with a mixed feeling of extreme tiredness and ultimate satisfaction. She is the one among millions who return home with a handful of Payasam and a mindful of sanctification. The largest gathering of women devotees have voiced the world that they are glad to suffer and stand for Amma, the divine deity Attukal Devi. This is also an example to the world which reiterates the power of determination and belief over the physical tussles of a lady. Despite the difficulties the resilient ladies come and go every year with an equipped knapsack to offer Pongala.



Attukal Devi temple which is situated at Thiruvananthapuram (Trivandrum), the capital city of Kerala. The shrine is located around 3 km from Thiruvananthapuram railway station, and almost the same distance from Sri Padmanabha Swami

temple. This temple and its rituals are recognized by the Guinness book of world records for the largest gathering of women devotees in the world on the ninth day of a ten day festival. It is estimated to be around thirty five in millions who get together for Pongala ritual and many fold all together on these ten days. The city, Thiruvananthapuram will be jam-packed with women disciples and the entire twenty four hours goes to them.

The saga of Attukal Devi has a resemblance with Kannagi in the Tamil epic Shilapathikaram. The version tells about the tragic love story of an ordinary couple Kannagi and her husband Kovalan. Kovalan gets deceitfully executed by assuming that he has stolen the anklet of the queen while he tried selling the jewel anklet of his wife Kannagi for raising the starting capital of his business. Kannagi proves kovalan's innocence by throwing the other jewelled anklet of the pair in the court and takes her revenge over Pandya Raja for killing her husband Kovalan. It is believed that after setting fire to Madurai city with her vengeance, on her way to kodungalloor, in Kerala she gave darshan to the natives at the place called Attukal in Thiruvananthapuram. Kannagi represents the resilient and powerful woman who sparred against injustice.

During the ten day festival, on each day morning there

IT IS estimated that around 35 million lady devotees get together for the PONGALA ritual at Thiruvananthapuram.

will be a vocal folk song called 'Thottam Paattu', which is being sung in a traditional way. The song narrates the story of Kannagi and on the ninth day when the story



finishes with the recital of the victory of Kannagi, the chief priest handover the fire from the shrine to light the main hearth called 'Pandara Aduppu'. Once the 'Pandara Aduppu' gets lighted the sacred fire moves to the nearby hearths to millions.

Women devotees from all over Kerala and nearby states and even from foreign countries gather here for Pongala rituals. They carry bricks, fire woods, pots and other materials for Pongala all the way from distant places. One or two days before Pongala some of them occupy the space so that they will get a convenient region closer to the temple. Many women feel it as their privilege and believe that when they offer Pongala to Attukal Devi with a sincere and devotional heart, the blessings of Devi will help them to come out from their sorrows and to fulfil their wishes. That determination and devotion is the reason for them to withstand the difficulty of hot sun beams and the irascibility of the hot smoke which spreads around the city.

Pongala mainly consists of preparation of Payasam. Some of the other sweet items made up of rice, jaggery

and banana are also offered to Devi during the ritual. Payasam is prepared in an earthen pot. The pot signifies the universe and the rice as our own mind. The fire wood commonly used are the dried parts of coconut tree which symbolises our sorrows. A Pongala is also considered to be an impression of 'Pancha Bhootha', the five elements. It is believed that when the rice gets cooked and getting blended with jaggery which stands for pleasure, it is presumed to get the eternal feel of satisfaction. Women consider the over spilling pots as an icon of acknowledgment by the deity. The holy water from the shrine evidences the conclusions of Pongala through its sanctification and with a pleasant mind devotee go back to their families. On the very same day, the desire to offer the next Pongala would have already been sprouted in the minds of many women.

Attukal Devi is presumed to be the Amma, the mother who is believed to take care of her children, the devotees. The festival also symbolises the clout of the feminine that can destruct and the compassion of feminine that can console the world.

Thiruvananthapuram City Corporation normally clears the bricks and other left overs within a few hours and the city immediately changes to ship-shape. The bricks are also being collected by the NGOs to provide to poor ones for construction of their shelter.

This festival brings the joy of acceptance of women as the supreme power by a society in terms of deity and devotees.

Ajith I.K.

Senior Branch Manager
Thiruvallam Branch
Kerala Zone



ईमानदारी / HONESTY

We salute an act of honesty shown by Shri Manoj Kumar Bhagwan Patil, staff-cashier of our Bullion Exchange Branch. One of the customers of the branch Mr.Milan Samantha wanted to deposit Rs 1,00,000/- in another person's account but inadvertently deposited a bundle (100 notes) of Rs. 2000/- (totalling Rs 2,00,000/-), collected the receipt and left in a hurry. Shri Manoj Kumar Bhagwan Patil immediately contacted the customer and returned the excess amount. This act of honesty by Shri Manoj Kumar Bhagwan Patil was appreciated by the customer who wrote a letter of appreciation to him.



प्लास्टिक कचरा प्रबंधन

कभी इधर गया-कभी उधर गया, हर जगह सर्वनाश करता गया,
मुझे रोक सको तो रोक लो, या अपने आप को बर्बाद होते हुए देख लो।

सागर-महासागर, पशु और जलीय जीव,
खा रहे मुझसे द्वेष और खीझ।

पर कौन समझाये उन्हें मनुष्य का ही है यह खेल,
अपनी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए बढ़ा रहे मुझसे मेल।

सब्जी की दुकान हो या परचूनी की खरीदारी,
हर जगह मांगे मुझे, क्यों ना समझे मैं हूँ कष्टकारी।

मत करो इस्तेमाल मुझे, आ गया तो ना जाऊंगा,
हरियाली बिछा दो दुनिया में, मैं भी तुम्हारे गुणगान गाऊंगा।

मैं प्लास्टिक भी हूँ, एक रावण राक्षस जैसा,
राम के हाथों विनाश, मोक्ष चाहता हूँ ऐसा।

भा रत में प्लास्टिक का प्रवेश लगभग 60 के दशक में हुआ और आज स्थिति यह है कि यह 60 साल में पहाड़ की शक्ल में बदल गया है। 2014 में प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार समुद्र में प्लास्टिक कचरे के रूप में 5000 अरब टुकड़े तैर रहे हैं। अधिक वक्रत बीतने पर ये टुकड़े माइक्रो प्लास्टिक में तब्दील हो गए। जीव वैज्ञानिकों के अनुसार समुद्र तल पर तैरने वाला यह भाग कुल प्लास्टिक का सिर्फ एक फीसदी है जबकि 99 फीसदी समुद्री जीवों के पेट में है। दुनिया के बहुत सारे मुल्कों में प्लास्टिक पर पूर्णतः प्रतिबंध लग चुका है, जैसे केन्या, फ्रांस, चाइना, इटली और रवांडा। और इन देशों में प्लास्टिक बैग के इस्तेमाल या इसके उपयोग को बढ़ावा देने पर भी सजा का प्रावधान किया गया है।

प्लास्टिक कचरा प्रबंधन नियम 2011 का संशोधित नियम 2016 में लाया गया। जिसमें नियमों पर अमल के दायरे को नगरपालिका क्षेत्र से बढ़ा देना सबसे महत्वपूर्ण कदम है क्योंकि प्लास्टिक का उपयोग ग्रामीण क्षेत्रों में भी तेजी से बढ़ रहा है।

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के अनुसार प्लास्टिक कैरी बैग की मोटाई 40 माइक्रोन से बढ़ाकर 50 माइक्रोन कर दी गई है। मंत्रालय के अनुसार हर दिन 15000 ह. जार टन प्लास्टिक कचरा सृजित होता है जिसमें से 9000 टन को एकत्र कर प्रोसेस किया जाता है बाकी 6000 टन ऐसे ही कचरे के रूप में इकट्ठा होता रहता है।

हाल ही में 180 से अधिक देश इस बात पर चर्चा करने के लिए जीनेवा में एकत्रित हुए कि प्लास्टिक कचरे पर कैसे नियंत्रण किया जाए और इसका बेहतर प्रबंधन कैसे हो। साथ ही इलेक्ट्रॉनिक कचरे और खतरनाक रसायनों पर भी इस सम्मेलन में विचार किया गया। सम्मेलन में कहा गया कि प्लास्टिक प्रबंधन के लाख नियम बना लें, जब तक इन्हें सही ढंग से लागू नहीं करेंगे, प्लास्टिक एकत्रित करने और इसकी रिसाइक्लिंग का उचित प्रबंध नहीं करेंगे, तब तक प्लास्टिक से निजात पाना कठिन होगा।

संयुक्त राष्ट्र की अध्यक्ष मारिया फर्नांडा ऐस्पिनोसा गार्सेस

ने प्लास्टिक प्रदूषण को कम करने के लिए भारत के प्रयासों की प्रशंसा की। इसके अलावा 2022 तक भारत में सभी एकल उपयोग प्लास्टिक को समाप्त करने के संकल्प के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी को संयुक्त राष्ट्र का सर्वोच्च पर्यावरण संबंधी पुरस्कार यूएनईपी चैम्पियन्स ऑफ द अर्थ से सम्मानित किया गया।

इस अभियान को प्रभावी बनाने के लिए केरल ने एक ऐसा कदम उठाया है जो प्लास्टिक कचरा प्रबंधन के लिए एक मिसाल है। राज्य ने बर्बाद प्लास्टिक से सड़क बनाकर इसका सही इस्तेमाल किया है। केरल ने 9700 टन प्लास्टिक कचरे से 246 किलोमीटर लंबी सड़क बना डाली है। इसमें प्लास्टिक की बोतलें, डायपर, पोलिथीन इत्यादि शामिल है। इन सड़कों का निर्माण 2014 में शुरू किए गए राज्य के "सुचित्व मिशन" के तहत किया गया। इस योजना का उद्देश्य केरल को एक स्वच्छ और हरित राज्य बनाना है।

केरल की तरह ही सभी राज्यों को प्लास्टिक कचरा प्रबंधन में पूर्ण योगदान देना चाहिए जिससे हमारा देश स्वच्छ और हरित देश बन सके। हमारे सभी जीव और पर्यावरण पूर्णतः प्लास्टिक के प्रदूषण से मुक्त हो सकें।

वास्तव में देखा जाए तो यह काम केवल किसी देश, किसी मंत्रालय या किसी राज्य का नहीं है। यह काम हर एक उस आम इंसान का

है जो अपनी हर एक छोटी मोटी जरूरत के लिए प्लास्टिक का उपयोग करता है। जब से महिलाएं कॉर्पोरेट सेक्टर में जॉब करने लगी हैं, तब से वे खाना बनाना भूलने लगी और उनकी आदत पड़ी फास्ट फूड की, मतलब "रेडी टु ईट या रेडी टु मेक" खाने की। उन्हें सिर्फ इतना ही करना पड़ता है, प्लास्टिक के पैकेट्स से सामग्री बाहर निकालना, पानी में डालकर ओवेन में रखना और खाना तैयार, पर साथ ही प्लास्टिक का कचरा भी तैयार। इसलिए जरूरी है घर पर सभी एक दूसरे की मदद करें जिससे रैडी समान पर रोक लगेगी। सब्जी या घर का सामान लाने के लिए कपड़े के थैले का इस्तेमाल करें। अपने घर से बाहर जाते वक्त बॉटल व गिलास साथ रखें ताकि प्लास्टिक की बॉटल की खरीद से बच सकें। पारिवारिक या किटी पार्टीयों में डिस्पोजल की जगह बर्तनों का प्रयोग करें। यह छोटे-छोटे काम करके हम अपने और इस पृथ्वी के स्वास्थ्य का ध्यान रख सकते हैं और अपनी आने वाली पीढ़ी को एक स्वस्थ वातावरण में जीने की सौगात दे सकते हैं।

प्रियंका शर्मा
झोटवाड़ाशाखा
जयपुर चल



हम लौट कर आएं

ये सितारा है हमारा
हम इसको चमकाएंगे
वो सुनहरा अतीत हमारा
वो सपना जो सबने संवारा
है मुश्किलें भी खड़ी
मगर हौसलों से न बड़ी
मिलकर हाथ बढ़ाना होगा
सबको आगे आना होगा
तुम भी करो अपने हिस्से का

संकल्प करो एक दृढ़ निश्चय का
हर हाथ बुने पतवार तूफानों से लड़ने को
नील गगन में नीला सितारा फिर से गढ़ने को
संभव है कुछ समय लगे
मगर लाज़िम है कि होसला बढ़े
कल हमारा था कल भी हमारा होगा
ये सितारा है हमारा
हम इसको चमकाएंगे
हम लौट कर आएं

राजेश कुमार
दसूहा शाखा
अमृतसर अंचल



किलों का राजा रायगड



श्री छत्रपति शिवाजी महाराज के राजकाल का एक प्रमुख दुर्ग 'रायगड' था। श्री शिवाजी महाराज ने स्वराज्य की स्थापना में सन 1674 में यह किला जावली के मोरे से जीतकर अपने कब्जे में लिया था। श्री शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक भी इसी किले पर भवानी माता को साक्षी मानकर हुआ। मराठा साम्राज्य के लिए पश्चिमी महाराष्ट्र में हुकूमत प्रस्थापित करने हेतु यह एक महत्वपूर्ण किला था।

(छायाचित्र: महादरवाजा - महाद्वार)

मुंबई से गोवा महामार्ग पर महाड शहर लगभग 130 किलोमीटर पर है एवं पुणे से 120 किलोमीटर। महाड से रायगड किला लगभग 28 किलोमीटर पर स्थित है। ऊपर किले तक जाने का रास्ता खूबसूरत घाटियों से एवं जंगल से होकर जाता है। जाते समय आजू बाजू के नजारे देखकर मन प्रफुल्लित हो जाता है। रास्ते में कई मनमोहक झरने भी देखने को मिलते हैं। इस किले को देखने का सर्वोत्तम समय बारिश के शुरुवाती दिनों में एवं ठंडियों में माना जाता है।

(छायाचित्र : गंगासागर तालाब)



यह दुर्ग जीतने के लिए बहुत ही कठिन माना जाता था क्योंकि यह दुर्ग समुद्री सतह से तकरीबन 820 मीटर यानी 2700 फीट की ऊंचाई पर स्थित है। साथ ही यह सहयाद्री माउंटेंस की रेंज में आता है। किले पर जाने के दो मार्ग हैं, एक सीढ़ियां चढ़कर और दूसरा रोप वे से। सीढ़ियां लगभग 1400 हैं और चलकर जाने का समय 2 घंटे तक लगता है एवं रोप वे से जाने का समय 10 से 15 मिनट का है। इस किले की चढ़ाई आज भी काफी कठिन मानी जाती है।

(छायाचित्र : तोपें)



रायगड किले का आकार एक मध्यम गांव के जितना है एवं गांव में रहने वाली हर सुख-सुविधा रायगड किले पर मौजूद थी। पीने के पानी के लिए किले के अन्दर कई सारे तालाब बनाये गए है। रायगड किले के प्रमुख आकर्षणों में राज दरबार, श्री शिवाजी महाराज की समाधि, नगारखाना, नगरपेठ या बाजारपेठ, जगदीश्वर मंदिर, गंगा सागर तालाब, महा दरवाजा, पालकी दरवाजा, अष्टकोण स्तंभ इत्यादि अपनी स्थिति बनाते है। कैदियों को रखने के लिए जेल एवं उनको अतिकठोर सज़ा देने के लिए टकमक टोक, ये सब देखने लायक हैं। मार्केट में हर दुकान की ऊंचाई घोड़े पर बैठे बैठे सीधे वस्तुएं खरीद सके ऐसी रखी गयी है।

(छायाचित्र : नगारखाना, शिव राज्याभिषेक प्रतिमा, टकमक टोक)

1400 सीढ़ियां चढ़कर आने पर दुर्ग में आपका प्रवेश महादरवाजे से होता है। भव्य और मजबूत ऐसा यह दरवाजा जो हर शत्रुओं से किले की रक्षा करने की क्षमता रखता था, दुर्ग स्थापत्य का अप्रतिम नमूना है। रायगड किले की संरचना के विषय में किए हुए दो महत्वपूर्ण शिलालेख जगदीश्वर वाघेश्वर मंदिर के जगह पर देखने को मिलते हैं। यह किला पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा संरक्षित किया गया है।

(छायाचित्र : बाजारपेठ मार्केट)



इस किले पर एक अजब गजब वाकिया देखने को मिलता है और वह है ध्वनि चमत्कार जिसमें 100 फीट की दूरी तक शांत वातावरण में धीरे से की हुई बात भी एक कोने से दूसरे कोने तक आसानी से सुनाई देती है। पुराने जमाने में माइक्रोफोन ना होने के कारण ऐसी बनावट वास्तु शिल्प कला का एक बेजोड़ नमूना प्रस्तुत करती है।

(छायाचित्र: श्री छत्रपति समाधी)

किले से नजदीकी जगह जैसे प्रतापगढ़ (किला), महाबलेश्वर - पंचगनी (मिनी कश्मीर, स्ट्रॉबेरी के बागान), शिवथरघट (पाणी का एक विशाल जलप्रपात एवं गुफा) को भी भेंट दी जा सकती है।

श्री छत्रपति शिवाजी महाराज के बेजोड़ साहस एवं वीरता को दर्शाने वाला यह किला आज भी पर्यटकों का प्रमुख आकर्षण है।

निलय ज. नागदेवे

महाड शाखा
रायगड अंचल





Prevention of Frauds

While going through one of the fraud cases circulated by our Fraud Risk Management Deptt., it was observed that number of Operations related fraud cases is 37.30% whereas advances related fraud cases are 62.70%. However, 99.62% of total amount under frauds is related to advances.

No insurance claim is tenable in frauds related to Advances is a well understood fact. At the same time, bank has to make 100% provision for these frauds means without having any recourse, bank has lost heavily due to these Advances related frauds, that too during this half year only. The bank is striving hard to increase its profitability by increasing RAM finance, CASA mobilization, cost cutting measures, Capital optimization but on the other hand, it's bound to make huge provisions for advances related. Can it be controlled or curbed, even if not avoided 100%? The answer is, **YES**.

The bank has well documented policy and procedures to be followed in letter and spirit, to safeguard interest of the bank and its employees. There are lot of measures have been suggested by the bank to keep the advances frauds away.

I am giving some of the common points to protect bank from frauds :

Preliminary precautions : The basic of banking starts with KYC and KYB, which is not only verification of documents submitted by the customer / borrower but it involves gathering information from other informal means too. Though there are various platforms available to e-verify genuineness of documents but it is always advisable to carry out due diligence in respect of Person, Project, Premises, Performance & Projections.

The due diligence about proponent comprise of verification of CIBIL, CFR, RBI defaulter list etc. It is

always important to carry out physical verification of details during pre-sanction inspection of the premises where the person is residing as well as carrying out the business / project.

While carrying out due diligence about the premises, proper care should be taken to ascertain ownership, locality, area, availability of basic infrastructure, environmental issues, neighborhood, various legal permissions / approvals etc. Whether the unit is satisfactorily functional for the time advised by the borrower or not, any industrial relation dispute is observed, electricity bill is showing adequate charges for power load required to produce the product should be vital points while carrying out inspection. Irrespective of type of limit under consideration, a list of existing machineries along-with details like make, mode, identical number, year of purchase, purchase price etc. should also be obtained.

Due diligence regarding performance and projections involves checking or verification of Sale / Purchase invoices, Debtor / Creditor list, Stock Register etc. on random basis apart from Financial statements including Manufacturing / Trading and Profit & Loss Account as well as CMA data. While going through projections, past performance is always of paramount importance.

Apart from these points, we should also give due importance to market information, antecedents & Status Report from other banks in respect of not only borrower but also for the Vendor / Supplier / Dealer / Builder etc. CERSAI report should be generated and kept on records. Wherever bank has empanelled Dealer / Builder or Vendor, it should be ensured that the payment is made directly to them mentioning that this amount is on account of credit facilities granted to the borrower and if the desired item is not provided / handed over to the

borrower, this amount should be refunded to the bank. This will ensure proper identification and standing of the supplier / vendor / builder as well as the borrower.

Precautions during sanction & disbursement :

We should ensure proper assessment of limits, neither under finance nor over finance is going to benefit the borrower as well as the bank. Obtention of various permissions / approvals to run the activity should also be ensured. Stipulation of necessary terms & conditions and compliance thereof is an important aspect to be looked into. Instead of over dependence on Panel Advocate / Valuer / Architect, physical inspection should be carried out and prevailing market rates be enquired from neighbours. Title & Search Report as well as Valuation Report / Estimates submitted should be read meticulously to find out any missing link of transactions, over or under valuation etc. Proper boundaries and landmarks should be cross verified.

Proper set of security documents to be chosen and got properly stamped, filled in and duly signed by the borrower as well as guarantor before disbursement. Wherever amount of credit facility is above threshold limits, CPA, Vetting of documents should invariably be completed. As soon as these formalities are completed, we should ensure creation of charge over the assets financed by us and registration thereof with the concerned authorities is a must.

It would be pertinent to mention here that Name, Address (Gut No. / Survey No., Part No. etc.), Area of the premises should invariably be the same on Title & Search Report, Valuation Report / Estimate (these should be specifically addressed and delivered directly to the branch only), Memorandum of Equitable Mortgage or Mortgage Deed, Intimation to Sub Registrar of Assurances as well as CERSAI because a minor change may give a major jerk to bank's interest later on.

Post registration of our charge, fresh report should be generated ensuring our charge is noted thereon. This is also applicable in case of Vehicles financed by the bank. Insurance for full value of securities should also be obtained and the address appearing on Insurance Policy with bank's clause should be the same as of the business premises. In fact, Insurance companies do not entertain claims in respect of loss occurred to the beneficiaries, even if the stock / machineries were indeed kept on the

place other than what is on record of Insurance Company. Secondly, if insurance policy is not taken for full value of security, the claim shall be settled proportionately by the Insurance Company which will adversely impact bank's interest.

Post disbursement precautions:

Now since bank has released the funds, it's most important to monitor the account to keep it as a Standard Asset. In case of Term loan for Plant & Machineries, we have to ensure that the machine of the same make / model / brand / capacity is received at the premises of the borrower and there is adequate arrangement to install the same within a reasonable time too. Time taken beyond justification may lead to replacing the new machine with an old one with same specifications after colouring the same.

Stage-wise progress of construction to be monitored in case of Plant, building or housing loan. Disbursement in Term Loan should be made directly to the supplier / dealer / builder in phased manner depending upon the completion of work / supply of machineries etc. and all related Bills / Receipts be verified (copy may be given to the borrower retaining original ones at branch) ensuring end use of funds through post sanction inspection.

Important checkpoints observed in Advances related **frauds indicate :**

1. Fake sales, Over valuation of Stock/of Debtors or not deducting Unpaid stock.
2. Showing Less Holding Period of Stock / Debtors or Use of short-term working capital funds for long-term commitments or Delay observed in payment of outstanding dues.
3. Fund Diversion & transferring funds to group companies or loan Repayments. Frequent invocation of BGs and devolvement of LCs.
4. Frequent change in the scope of the project to be undertaken.
5. Foreign bills remaining outstanding with the bank for a long time and tendency for bills to remain overdue.
6. Under insured or over insured inventory or Invoices devoid of TAN and other details.
7. Funds coming from other banks to liquidate the outstanding loan amount unless in normal course.

8. Request received from the borrower to postpone the inspection of the Godown for flimsy reasons.
9. Funding of the interest by sanctioning additional facilities.
10. Exclusive collateral charged to a number of lenders without NOC of existing charge holders.
11. Concealment of certain vital documents like master agreement, insurance coverage or Dispute on title of collateral securities.
12. Floating front / associate companies by investing borrowed money.
13. Critical issues highlighted in the stock audit report.
14. Liabilities appearing in ROC search report, not reported by the borrower in its annual report.
15. Frequent request for general purpose loans or ad-hoc sanctions.
16. Not routing of sales proceeds through consortium / member bank / lenders to the company.
17. LCs issued for local trade / related party transactions without underlying trade transaction.
18. High value RTGS payment to unrelated parties or Heavy cash withdrawal in loan accounts.
19. Non production of original bills for verification upon request.
20. Significant movements in inventory, disproportionately differing vis-a-vis change in the turnover.
21. Significant movements in receivables, disproportionately differing vis-à-vis change in the turnover and/or increase in ageing of the receivables.
22. Disproportionate change in other current assets.
23. Significant increase in working capital borrowing as percentage of turnover.
24. Increase in Fixed Assets, without corresponding increase in long term sources (when project is implemented).
25. Increase in borrowings, despite huge cash and cash equivalents in the borrower's balance sheet or Material discrepancies in the annual report.
26. Frequent change in accounting period and/or accounting policies.
27. Costing of the project which is in wide variance with standard cost of installation of the project.
28. Claims not acknowledged as debt high or substantial increase in unbilled revenue year after year.
29. Large number of transactions with inter-connected companies and large outstanding from such companies.
30. Significant inconsistencies within the annual report (between various sections) & poor disclosure of materially adverse information and no qualification by the statutory auditors.
31. Raid by Income tax / sales tax / central excise duty officials.
32. Significant reduction in the stake of promoter /director or increase in the encumbered shares of promoter/director.
33. Resignation of the key personnel and frequent changes in the management.

These are some indicators inviting attention of Credit personnel of the branch to immediately look into to avert frauds. Frauds can't be eliminated as such. The effort lies in trying to contain the menace. Its effect can be widespread, causing long term financial and reputational damage. Fraud risk is something that no bank would like to deal with.

Internal controls need to be strengthened as they can weaken over time due to technological advances or human intervention or because of the rise in new fraud schemes.

Nonetheless, having anti-fraud measures in an organization's control environment can go a long way in deterring individuals from perpetrating fraud because the message going down the line is that the senior management is cognizant of this crime and is committed to preventing it within the organization. Remember the fraudster is always a step ahead !!

Dinesh S Parmar
Chief Manager & Faculty
MDI, CBD Belapur





समय चक्र

मि स्टर बनेर्जी ने सर्दी की अलसाई दोपहर में द टेलीग्राफ के पत्रों को उलटते हुए बहू को आवाज़ लगाई। सरला बेटा, एक कप लीकर वाली चाय देना। सरला का मूड आज काफी खराब था। सोमवार का दिन ऐसे ही भागमभाग वाला होता है ऊपर से काम वाली बाई नहीं आई आज, और अब ये चाय की फरमाइश, ओह! गुस्से मे वो फट पड़ी, बोली, अड्डा मारना है तो बाहर क्यों नहीं चले जाते? दिन भर बस अखबार, टीवी और चाय पे चाय। मिस्टर बनेर्जी सन्न रह गए। ये तो पता था कि बहू उनसे थोड़ी नाराज़ रहती है लेकिन इस सवाल जवाब की उम्मीद नहीं थी। वे चुपचाप नहाने चले गए। आज मिसेस बनेर्जी की बहुत याद आ रही थी उन्हें। गुस्से में, परेशान, वो तैयार हो गए। घर से बिना कुछ बोले, चुपचाप बाहर निकल गए। फुटपाथ पर चलते हुए सोच रहे थे, कहाँ जाऊँ? आस-पड़ोस में तो कई अड्डे थे, चाय की दुकानों पे। पर अब उन्हें ढंग से जानता ही कौन है अपने मुहल्ले में। बैंक की नौकरी में बार बार ट्रान्सफर और व्हाइट कॉलर जॉब की गरिमा ने उन्हें लोगों से दूर और अपने ही पाड़ा में अप्रवासी बना दिया था। बैंक से याद आया, बैंक चलूँ क्या? मिस्टर बनेर्जी सोचने लगे, और विकल्प ही क्या थे कोलकाता में। प्रिंसेप घाट, विक्टोरिया, मैदान और नंदन तो मिसेस बनेर्जी के गुजर जाने के बाद जाना छोड़ दिया था। एक-आध बार गया भी तो बड़ा अनमना सा होकर लौटा। बैंक, अपने ऑफिस गए भी आठ साल से ज्यादा हो गए। सेवा निवृत्ति के बाद कभी गया नहीं। जाता भी कैसे, बहुत ही खूंसट बॉस माना जाता था मैं। कुछ लोग हिटलर भी कहते थे पीठ पीछे। नियम और सिद्धांतों पर चलने के कारण उन ऊंचाइयों पर नहीं पहुँच पाया जहाँ पहुँचना चाहिए था, पर मुझे उसका कोई गिला नहीं। और आंचलिक प्रबंधक होना भी कोई छोटी बात थोड़े ही थी। आज मन किया कि चलो बैंक होकर आते हैं। कुछ पेंशन का काम भी था, इसी बहाने वो भी हो जाएगा। डलहौजी के लिए टैक्सी ले निकल पड़ा। ऑफिस की बिल्डिंग पूरी तरह बदल चुकी थी, ऊपर से ग्लास फ्रेम लग गया था बिल्डिंग के ऊपर, जिससे

बाहर से पूरे कॉर्पोरेट ऑफिस जैसा नजर आ रहा था। लेकिन अंदर आने के बाद पता चला कि ज्यादा कुछ नहीं बदला था। बदले थे तो कुछ लोग, दीवारों के रंग और फ़र्निचर। हवाओं में पुरानी गंध और रामविलास के चाय की खुशबू तलाशते हुए मानव संसाधन विभाग की ओर चल पड़ा। तब तक देखता हूँ सामने से सक्सेना आ रहा है। उसने झटके से पहचान लिया। मुझे देखते ही बोला, अरे सर आप यहाँ कैसे? आइये आइये। बहुत ही गर्मजोशी से अपने केबिन में ले गया। बोला, "बहुत अच्छा लगा आप से मिलकर, आप तो हमेशा से मेरे मार्गदर्शक रहे हैं। मगर सेवा निवृत्ति के बाद आप तो गुम ही हो गए"। बातों का क्रम ज्यादा देर ना चल पाया, लगातार बजते टेलीफ़ोन और फ़ाइल लेकर चक्कर काटते अफसरों की आपा धापी के बीच उसने बोला, "सर बिना चाय पिये जाइएगा नहीं, मैं बस थोड़ी देर में एक काम खत्म करके आता हूँ"। उसके निकलते ही मैं चल निकला पेंशन विभाग की ओर। रास्ते में कुछ परिचित लोग दिखे। कुछ लोगों ने दुआ सलाम की, कुछ की आँखों में प्रश्न थे, पता नहीं किस काम से आए हैं, तो कुछ नज़रें भी चुरा रहे थे कि कोई काम ना बता दें। खैर पेंशन विभाग पहुँचकर अपना काम कराया। निकलने से पहले अफसर ने कहा, मेरा मोबाइल नंबर ले लें, अगर कोई परेशानी हो तो मुझे फोन कर दें। खुशी हुई उसके इस तरह के व्यवहार को देखकर। वहाँ से निकलते वक्त एक अजीब अनुभव हुआ कि, जिस ऑफिस में आपकी इजाज़त के बिना एक सुई इधर से उधर नहीं होती थी, वहीं अपने आप को एक अजनबी की तरह पाना। नामदार से गुमनामी का सफर, हिला देने वाला था। लगा कि जा के हरेक स्टाफ को कहूँ, अरे उठ के दुआ सलाम तो करो, मुझे पहचानो तो सही, पूछो तो हाल कैसा है? मैंने भी तुम्हारी तरह से संस्थान को अपने पसीने से बड़ा किया है और सच कहता हूँ मेरी रगों में इतने सालों तक कम करने के बाद बैंकिंग के सिवा और है क्या? लेकिन ये भी एक सच ही है, आज मैं हूँ तो बस एक रिटायर्ड स्टाफ।

इसी कश्मकश में बँक से निकल रहा था कि, महेश मिल गया। उसने कहा, "कि मैं भी अपने किसी काम से ऑफिस आया था, चल चाय पीते हैं। निकल चले हम दोनों शेयर मार्केट वाली गली में। कोना दुकान पर कॉफी और मलाई टोस्ट खाते हुए हम दोनों उन दिनों की यादों में डूब गए जब हमने ये ऑफिस जॉइन किया था और यहीं हमारी शाम की चाय हर रोज़ पक्की थी। बहुत शांति मिली इस पूरे चक्र को एक बार फिर से जीने में। यहीं से मैंने शुरुआत की थी और आज यहीं बैठकर पूरे जीवन को एक चलचित्र की तरह देख रहा हूँ।

शाम ढल रही थी, और टंड भी बढ़ रही थी। मैंने महेश से विदा ली और घर के लिए वापस टैक्सी ली। रास्ते में यूँ ही सोचने लगा ये जिंदगी भी कितनी अजीब है, ना उतनी अच्छी है जितनी हम उम्मीद करते हैं और ना ही उतनी बुरी जितनी हम समझते हैं। ये जिंदगी तो बस फुच्के की तरह थोड़ी तीखी, थोड़ी खट्टी और

थोड़ी मीठी है, जिसका स्वाद हम समय समय पे अपने जीवन में अनुभव करते हैं। जिंदगी तो निरन्तर चलती ही रहती है, बस जिंदगी जीने की एक वजह होनी चाहिये और छोटी छोटी चीजों में खुश होने की कला आनी चाहिये भले ही वो वजह किसी दोस्त के साथ एक कप चाय पीने की खुशी में मिल जाए। पता नहीं एक अजीब सी ही शांति महसूस हो रही थी मन में। एक टंडी सांस ली मैंने, तभी मोबाइल पे बीप की आवाज हुई। सरला का मैसेज था, "सॉरी बाबा, जल्दी घर आ जाओ, आते वक्त महाराज की दुकान से हींग कचौड़ी और जलेबी लेते आना।"

कंचन कुमार

मुख्य प्रबन्धक(आपदा प्रबंधन)
कोलकाता आंचलिक कार्यालय



कल फिर सुबह होगी..

जिंदगी में मुश्किलें अनेक मिलेंगे,
मुसीबत में साथ छोड़ने वाले हर एक मिलेंगे,
दिल तोड़कर अपना निराश मत होना,
क्योंकि कल फिर सुबह होगी..
किसी के सामने ना झुकना ऐसी फितरत है,
कामयाबी तक पहुंचकर निराशा मिलना ऐसी किस्मत है,
इस निर्दई दुनिया में खुद को अकेला मत समझना,
क्योंकि कल फिर सुबह होगी..
अंधेरी रात के बाद उजाला जरूर आता है,
खुद्दार लोगों को तो खुदा भी आजमाता है,
बार बार ठोकर खाने को अंत मत समझना,
क्योंकि कल फिर सुबह होगी..
कामयाबी की राह में कांटे बहुत मिलेंगे,
दिल को दर्द बांटने वाले कम मिलेंगे,
ऐसे हालात में भी अपना धैर्य मत खोना,
क्योंकि कल फिर सुबह होगी..
बार-बार ठोकर खाकर भी इतराना होगा,
कांटों का ताज पहन कर भी मुस्कुराना होगा,

तेज तूफान में भी अपने लक्ष्य पर अडिग रहना,
क्योंकि कल फिर सुबह होगी..
रात की बाहों में बुने जाते हैं सपने हजार,
असफलताओं की आंधी में उजड़ते हैं आशाओं के मूर्तिकार,
अस्थिरता के शिकंजे में भी हताश मत होना,
क्योंकि कल फिर सुबह होगी..
किस्मत से तंग आकर दुनिया छोड़ने का मन करेगा,
कई बार मात खाकर लक्ष्य को भूल जाने का मन करेगा,
बुरे विचारों के इस ज्वालामुखी को मन में ही दबा देना,
क्योंकि कल फिर सुबह होगी..
अंधेरी तंग सुरंग के अंत में रोशनी जरूर होती है,
आशाओं के बवंडर में उम्मीद की किरण जरूर होती है,
अनजाने लोगों के तीखे तर्कों का डटकर सामना करना,
क्योंकि कल फिर सुबह होगी..

सौरभ पांडे

कुरखेड़ा शाखा
नागपुर अंचल



पं. सुरेश बापट को मिला बड़ा सम्मान



आ काशवाणी और दूरदर्शन हमेशा से भारतीय कला और संस्कृति को दूर-दूर तक पहुँचाने का सर्वश्रेष्ठ माध्यम रहे हैं। इस प्रतिष्ठित मंच से अपनी कला की प्रस्तुति का अवसर मिलना, कलाजगत में प्रतिष्ठा का मानदंड माना गया है। कलाप्रस्तुति का स्तर अधिकाधिक विशुद्ध रहे, इसलिये इन माध्यमों का संचालन करनेवाली यंत्रणा "प्रसार भारती" द्वारा कलावंतों के गुणों के मानांकन की प्रक्रिया प्रस्थापित की गयी है। इसी संदर्भ में एक गौरवमय वार्ता सभी के साथ साझा करने का सानंद अवसर ले रहा हूँ।

अपने प्रधान कार्यालय में कार्यरत पं. सुरेशजी बापट को अभी अभी प्रसार भारती द्वारा "ए टॉप ग्रेड" (सर्वोच्च ग्रेड) मानांकन दिया गया है। यह श्रेणी कलावंतों के मानांकन प्रणाली की सर्वोच्च श्रेणी मानी जाती है। पं. सुरेश बापट गत अनेक वर्षों से "आकाशवाणी", "दूरदर्शन" के साथ साथ देश-विदेशों में अनेक संगीत सभाओं में अपनी हिंदुस्तानी शास्त्रोक्त संगीत प्रस्तुति के लिये अत्यंत लोकप्रिय तथा प्रतिष्ठा प्राप्त गायक हैं। अपने बैंक के अनेक कार्यक्रमों में भी उन की गायन प्रस्तुति का आनंद हम सब ने लिया है।

एक विशेष बात अवश्य बतानी होगी। बैंकजगत की एक अत्यंत प्रतिष्ठित प्रतियोगिता बैंक बोर्ड द्वारा आयोजित की जाती थी। उस स्पर्धा में अपने बैंक के समूह का पं. सुरेशजी लगभग एक दशक तक संगीत संयोजन तथा मार्गदर्शन करते रहे हैं। उस स्पर्धा में हिंदुस्तानी शास्त्रोक्त गायन में वे निरंतर प्रथम रहे हैं। साथ साथ उनके नेतृत्व में समूहगीतों में भी अपने बैंक ने अनेक पुरस्कार प्राप्त करते हुए पाँच बार स्पर्धा में सर्वश्रेष्ठ बैंक का भी पुरस्कार जीता है।

अपने बैंक के बोधचिन्ह जैसा ही कलाजगत का एक चमचमाता सितारा अपने बैंक-परिवार का सदस्य है यह हम सब के लिये अत्यंत गौरव की बात है।

पं. सुरेश बापटजी का बैंक के संगीत समूह द्वारा हार्दिक अभिनंदन !!

- प्रमोद बापट,
मुंबई उत्तर अंचल
सेवा शाखा, अंधेरी

जल संसाधन प्रबंधन

जल जीवन का आधार है। प्राणवायु के बाद जल ही इस दुनिया की सबसे अमूल्य चीज है। सभी पेड़-पौधों, जानवर, मनुष्य को जीवित रहने के लिए जल का होना अति आवश्यक है। पूरे तारामंडल में पृथ्वी ही ऐसा एकमात्र ग्रह है जहाँ केवल जल होने की वजह से जीवन संभव हो सका है। इसीलिए कहते हैं, "जल ही जीवन है"।

जल हमारे जीवन में हर एक कदम पर उपयोगी है। शरीर में जल की कमी से अनेक बीमारियाँ हो सकती हैं। जल का इस्तेमाल सिर्फ पीने के लिए ही नहीं बल्कि खेती के लिए, बिजली निर्माण में तथा विविध कारखानों और कंपनियों में होता है। जिस दिन घर में पानी नहीं आता उस दिन ना तो खाना बन पता है ना ही कपड़े धोए जा सकते हैं, ना स्नान किया जा सकता है, ना ही शौचालय का इस्तेमाल किया जा सकता है। इस तरह से देखें तो जल हमारे जीवन में अहम रोल अदा करता है। पृथ्वी के 72 प्रतिशत भाग पर जल पाया जाता है। जल के मुख्य स्रोत हैं - समुद्र, नदियाँ, झरने, झील, तालाब, वर्षा का जल, मृदा जल, वायुमंडल जल जो वायु को नम बनाए रखता है।

बढ़ती जनसंख्या, औद्योगीकरण, जंगल की कटाई से धीरे-धीरे पूरे विश्व में जल संकट बढ़ता जा रहा है, क्योंकि लगभग 3 प्रतिशत जल ही पीने योग्य है। जल की लगातार बर्बादी से धीरे-धीरे प्राकृतिक भूजल भंडार खाली हो रहे हैं। ग्लेशियरों के सिकुड़ने से नदियाँ भी सूखती जा रही हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ का कहना है कि अगर जल संकट के निदान हेतु गंभीर प्रयास नहीं किए गए तो आने वाले वर्षों में स्वच्छ पेयजल के अभाव में विविध कारणों से विश्व में लगभग 20-80 लाख लोग अपनी जान से हाथ धो चुके होंगे। अगर इस प्राकृतिक आपदा पर नियंत्रण नहीं हुआ तो, 21 वीं सदी के मध्य तक 62 देशों के करीब 8 अरब लोगों को भीषण जल संकट झेलना पड़ेगा। अगर जल को यूँ ही बर्बाद किया गया तो वह दिन दूर नहीं जब पीने के पानी के लिए लड़ाइयाँ लड़ी जाएंगी। हमें पर्यावरण को बचाना है तो पहले

बढ़ती जनसंख्या, औद्योगीकरण, जंगल की कटाई से धीरे-धीरे पूरे विश्व में जल संकट बढ़ता जा रहा है, क्योंकि लगभग 3 प्रतिशत जल ही पीने योग्य है।

पानी को बचाने को प्राथमिकता देनी होगी क्योंकि बिना पानी के पेड़-पौधों का जीवन दुर्लभ है, साथ ही बिना पेड़-पौधों के मानव या किसी भी जीव जन्तु का जीवन संभव नहीं है। और तो और बिना पेड़-पौधों के बारिश का होना भी असंभव है और बिना बारिश के प्रकृति का संतुलन बनाये रखना मुश्किल ही नहीं बल्कि नामुमकिन है।

एक सीमित संसाधन के रूप में, पानी की आपूर्ति एक चुनौती बन गयी है। कृषि क्षेत्र दुनिया के ताजे पानी के संसाधनों का सबसे बड़ा उपयोगकर्ता है, जिसकी खपत 70 प्रतिशत है। जैसे जैसे दुनिया की आबादी बढ़ेगी वह अधिक खाद्य की मांग करेगी। खाद्य के साथ साथ आवासीय भूमि की भी मांग बढ़ेगी जिसे पूर्ण करने के लिये खेतों को नष्ट किया जाएगा और जंगल की कटाई की जाएगी जिससे पर्यावरण का संतुलन बिगड़ जाएगा और हालात इतने खराब हो जाएँगे कि फिर पृथ्वी पर जीवन बचाना मुश्किल हो जाएगा। बढ़ते उद्योगों और शहरी विकास के विस्तार से प्राकृतिक संसाधनों में भारी गिरावट हो रही है। अगर भविष्य में आने वाले जलसंकट को अभी से गंभीरता से नहीं लिया गया तो धरती पर मानव और अन्य जीवजंतुओं का अस्तित्व ही नष्ट हो जाएगा। वैश्विक जलसंकट से बचने के लिए जल संचयन के उपाय ढूँढ़ने होंगे, पानी की अनावश्यक बर्बादी रोकनी होगी, किसानों को भोजन की बढ़ती मांगों को पूरा करने के लिए उत्पादकता बढ़ाना होगा तथा उद्योगों और शहर विकास में पानी का अधिक कुशलता से उपयोग करने के तरीके खोजने होंगे।

किसी भी देश के पर्यावरण और अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए जल और अन्य प्राकृतिक संसाधनों का प्रबंधन अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारत की अर्थव्यवस्था में भूजल एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह लगभग 85 प्रतिशत ग्रामीण भाग, 50 प्रतिशत शहरी आवश्यकताओं और 60 प्रतिशत से अधिक हमारी सिंचाई जरूरतों को पूरा करता है। जिससे हम अंदाजा लगा सकते हैं कि जल हमारे लिए कितना महत्व रखता है। लेकिन जिस तरह से भूजल स्तर घटता जा रहा है उससे ऐसा लग रहा है कि हम इसे गंभीरता से नहीं ले रहे हैं। देश के कई हिस्सों में अनियंत्रित भूजल निकासी की जा रही है, जिससे भूजल स्तर में गिरावट आई है, नदियाँ और झरने सूखने लगे हैं। ग्रामीण क्षेत्र में हालात अत्यंत गंभीर हैं, लोगों को पीने के एक मटके पानी के लिए 10-15 किलोमीटर तक जाना होता है तो फिर और जरूरतों के लिए कितनी मुश्किलों का सामना करना होता होगा इसकी कल्पना भी नहीं कर सकते। इसीलिए जलप्रबंधन

उपाय योजनानों को प्राथमिकता देने कि जरूरत है। चूंकि शहरी लोगों पर इसका इतना प्रभाव नहीं हुआ है वे इसे इतनी गंभीरता से नहीं ले रहे हैं, परंतु जल संकट केवल ग्रामीण भागों की समस्या नहीं है और इस संकट से निपटने के लिए हर एक व्यक्ति को योगदान देने की जरूरत है।

जल प्रबंधन का सबसे प्रथम उपाय है बारिश के पानी का उचित प्रबंधन। बारिश के पानी को जलाशयों में संरक्षित किया जाए, बांध बनवाए जाएँ और सूखाग्रस्त क्षेत्र में बांधों की संख्या ज्यादा हो। वर्षाजल को भूगर्भ तक पहुँचने हेतु टॉक, ट्रेंच एवं सोकपिट बनाए जाए। इस के लिए कृषि विशेषज्ञों, जलसंसाधन विशेषज्ञों तथा ग्राम विकास अधिकारियों को समन्वित ढंग से काम करना होगा। व्यक्तिगत रूप से यह हमारा कर्तव्य है कि हम सभी पानी बचाएं, घरों में वाटर हार्वैस्टिंग करें और घर के साथ-साथ सार्वजनिक स्थानों पर भी पानी का इष्टतम उपयोग करें।

सार्वजनिक स्थान एवं कार्यस्थलों पर जलप्रबंधन के निम्नानुसार प्रयोग कर सकते हैं।

1. मेहमानों को पानी ऑफर करने से पहले उनसे पूछ लें कि वे पानी पीना चाहता हैं कि नहीं जिससे अनावश्यक पानी की बर्बादी टाली जा सकती है।
2. छोटे- छोटे लीकेज जल्द ही ठीक कर लें जिससे पानी का अपव्यय रोका जा सके।
3. आवश्यकता ना होने पर बिजली के उपकरणों का प्रयोग न करें और अभी से इसके इष्टतम प्रयोग की आदत डालें। एयर कंडिशनिंग प्लांट पानी की अत्यधिक मात्रा का उपयोग करते हैं। इसकी समय समय पर जांच करवाएं।
4. कम जल प्रवाह वाले शौचालय या नल को स्थापित करें।

5. सफाई के कार्यों के लिए आवश्यकतानुसार ही पानी का इस्तेमाल करें तथा कम से कम पानी के प्रयोग की आदत डालें।
6. गाड़ियों की सफाई के लिए यथासंभव पोंछे का इस्तेमाल करें और आवश्यकता होने पर ही दबाव क्लीनिंग का प्रयोग करें। बहने वाले पानी जमीन में जाने की व्यवस्था करें जिससे भूजल स्तर को बढ़ाने में सहायता मिले।
7. मीटिंग में ऐसे ग्लास का उपयोग करें जो आकार में छोटे हों।
8. बैंक और दूसरे सरकारी कार्यालय सरकारी योजनाओं के अलावा पानी के महत्व के संबंध भी कार्यक्रम आयोजित करें और पूरे वर्ष में जिन कर्मचारियों ने पानी या पर्यावरण संबंधी कोई विशेष कार्य किया हो तो उसे सम्मानित कर सकते हैं।
9. इन सारे विश्लेषणों का सार है कि जल प्रबंधन हेतु निरंतर सरकारी एवं गैर सरकारी प्रयास हो रहे हैं लेकिन उसकी गति को बढ़ाना जरूरी है। जल संकट एक वैश्विक मुद्दा है अतः इसे व्यापक समस्या मानते हुए हर देश को मिलजुलकर ठोस कदम उठाने होंगे, तभी पूरी मानवता का भविष्य सुरक्षित होगा। इसीलिए समय रहते पानी की उपयोगिता को समझते हुए सही जगह और जरूरत के मुताबिक पानी का प्रयोग करें। बिना वजह पानी का प्रयोग ना स्वयं करें और ना ही किसी को करने दें क्योंकि आज का लिया हुआ कदम आगे आने वाली कई पीढ़ियों का जीवन बचा सकती है। पर्यावरण की हानी रोकें और राष्ट्र निर्माण में योगदान दें।

वैशाली रामटेके

मुख्य प्रबंधक, विधि विभाग
आंचलिक कार्यालय, पुणे



तू ज़रा चल तो सही, तू ज़रा बढ़ तो सही,
तू जो आगे जाएगा, दूर अंधेरा पाएगा,
लक्ष्य जो लगे दुष्कर, डगर जो लगे दूभर,
मैं रहूँगा साथ तेरे, तो भी क्या घबराएगा,
खोने का हो डर अगर, हारने की हो चिन्ता मगर,
तो सोच क्या तू पाएगा, क्या शून्य को भी खोएगा,
माना कि तूफान बड़ा है, सामने सुमेरु खड़ा है,
स्वयं पर विश्वास कर, पंख जरा फैला तो सही,
तू ज़रा चल तो सही, तू ज़रा बढ़ तो सही....||



निलेश भाटी
टिम्बरनी शाखा

A SUCCESSFUL BUSINESS REQUIRES A CLEAR VISION



For business entities a huge population is a definite advantage. The sheer size of Indian population Business of all sorts are growing in India, thanks to the size of the country's market and adding middle class population. However not all the businesses are successful in the same measure and can never be. A number of factors determine how a business enterprise will perform. These include motivation of the people involved in business, quality and competitiveness of the product or service being offered, optimization of resources and of course market conditions. Many of these things come from vision. Still vision has a much large perspective and may have the overall bearing on the success or failure of a business enterprise.

All big companies have a vision and mission statement. It is like a rule to have such vision and mission statement which can be found on the website of a company, in their annual reports and in other media. But it is not always easy to find this particular vision and mission in practice or action. Worst, in many cases not everyone in the management team and employees down the line, are aware of these ideals and guiding principles. When this author spoke to participants of various induction training programmes in both public and private companies, it was revealed that at least in half the cases there was no specific mention of the vision and mission statement of the company during the program.

A business does not have to exist just for the sake of business. In fact there can be a question mark on the survival if a business is wanted to be run like this.

In this age of wider choices, thin margins and growing expectations of customers, every move of business has to be well thought out, cautious and strategic. It is crucial to formulate an authentic vision and then put it into action with all sincerity and best of intentions. There is no dearth of definitions of vision and mission. It is easy to copy and compile through jugglery of words. But the words will be mere words unless these are put into action and prove to be the foundation of success. This is true of both organizations and individuals.

Talk about basics. By vision we mean a very specific definition of success at a very specific point in the future. When we say mission we mean something that is present before us like a guiding star. It's aspirational, so in a way we are never going to get there, in fact we never can get there. Here is an example -there is a bank of American origin with its mission outlined as 'making life better' It sounds really simple, good and inspiring, but it's not as if one day the Chief Executive can get her team together and say 'Okay folks, we've officially made lives of our customers better. We're all done.'

As such though a mission can be inspiring, it can also be exhausting, because it's rather impossible to accomplish

IN this age of wider choices, thin margins and growing expectations of customers, every move of business has to be well thought out, cautious and strategic.

fully. That is where vision comes in, because the business need to feel successful at different points along the journey. So if mission is like 'why', why one is going on a journey; then the vision should be ones when, where and what-Where one is going on a journey, when one is going to get there and what it should look like when one arrives. There are uncertainties bound to cross the way, unexpected challenges will also emerge but clarity in thinking and determination can smoothen the ride. All these are related to vision. Being committed to both a mission and vision keeps an enterprise continually guided by its purpose while moving towards a realistic definition of success in relation to a time frame. It can also be a tool for reality check. If there is no vision to ground there

VISION and mission are must haves for a business, Equally important is to live by it, share it with each stakeholder and leverage it for the greater success of the enterprise.

will be so many variables at play pulling the enterprise in different directions and make it lose the critical focus. Clarity of vision helps a company in efficient decision making as there is only one most important question to answer-will this decision get it closer to or farther from the stated definition of success. You also are able to hire right by making sure that only candidates who share the vision of the company are taken on board. Sharing clear vision in a hiring process helps companies to identify candidates who can see themselves in the company's vision. Unifying the existing workforce towards a common vision can also be exhilarating as people want to be part of something bigger than themselves. Also when people are inspired to work around a common vision, the reward when they get there together is more fulfilling than derived from money alone.

Bank of India's vision is conveyed in the following words-'To become the Bank of choice for Corporates, Medium Business and upmarket Retail Customers and Development Banking for Small Business, Mass Market and Rural Markets.' There is simplicity and clarity in this vision. However this vision shall be accomplished when each unit of the organization follows this, all employees of the Bank take this as a guiding principle and continuously work on the vision.

Since banks' business is done through branches, the vision has to be recreated at branch level and every employee should feel pride in the vision. The role of branch leadership is crucial in ensuring that their team members remain glued to the vision and remain committed to it, come what may.

Vision and mission are must haves for a business, Equally important is to live by it, share it with each stakeholder and leverage it for the greater success of the enterprise. If we're part of an organization we own its vision and it is our ethical and moral responsibility to ensure that we never fall short of making this vision a reality.

Vijay Prakash Srivastava,
Chief Manager (Retd.)



जीवन कहाँ आसान होता है

जीवन कहाँ आसान होता है
मुश्किलों पे ही जो ध्यान होता है
माना कि है भार बहुत
दुख का लगता अंबार बहुत
तुम शिथिल जो हो जाओगे
तो बिन संघर्ष किए हारे माने जाओगे
फर्क तभी महसूस करोगे
खुद तस्वीर में रंग भरना शुरू करोगे
सर्दी की तुम धूप बनो
बारिश की पहली बूंद बनो
कठिन ना हो राहे तो मज़ा कहाँ
खूबसूरत है दुनिया थोड़ा शोध करो
तुम मन के ही हारे हो
वरना सपने सच सारे हो
या तो पल जीते जाओ
या समय तुम झेल ना पाओ
फिर वही दोहराती हूँ
तुम चाहो खुशी गले लगा लेना
या बिन बात मातम मना लेना
जीवन नहीं आसान होता है
मुश्किलों पे ही जो ध्यान होता है।



निवेदिता जोशी
अधिकारी (नैनीताल शाखा)
देहरादून अंचल



डिजिटल युग में भारतीय बैंकिंग के बढ़ते कदम व इससे जुड़ी सावधानियाँ

आज के वैश्वीकरण के युग में तकनीकी ने जिस तरह अपने पाँव पसारते हैं, उससे समाज का कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं रहा है। इस तकनीकी के दौर में बैंकिंग उद्योग जगत में आमूल-चूल परिवर्तन हुआ है और बैंकिंग उद्योग ने समस्त बैंकिंग सुविधा मोबाइल पर ही उपलब्ध करा दी है। इस होड़ में चाहे सरकारी बैंक हों अथवा निजी बैंक, सभी मोबाइल सुविधाओं से लेस हैं। ग्राहकों को समस्त बैंकिंग संबंधी संव्यवहार मोबाइल के माध्यम से ही प्राप्त हो रहे हैं। भारत सरकार द्वारा लागू विमुद्रीकरण (नोटबंदी) के परिणामस्वरूप विभिन्न मोबाइल एप्स, वालेट्स, आदि के जरिये कैशलेस बैंकिंग की दिशा में लोगों का रुझान बढ़ा। जिसके फलस्वरूप आज लेन-देन में नकद पर लोगों की निर्भरता कम हुई है और भारतीय समाज ने एक नकदरहित अर्थव्यवस्था की ओर कदम बढ़ा दिये हैं।

बैंक में ग्राहक सेवा को सर्वाधिक प्रभावित करने वाले दो कारक हैं बैंककर्मियों व प्रौद्योगिकी (टेक्नोलजी)। बैंक कर्मियों ही ग्राहकों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर बैंक द्वारा लाई गई नयी-नयी योजनाओं को लोकप्रिय बनाते हैं।

पिछले कुछ वर्षों में एटीएम, कॅश डिपाजिट मशीन, पॉइंट ऑफ सेल मशीन, इंटरनेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग व विभिन्न एप्स जैसे एसबीआई के प्रीडम/यूथ फॉर इंडिया एप्स, बैंक ऑफ इंडिया का IMT (INSTA MONEY TRANSFER एवं मोबाइल बैंकिंग व स्टार टोकन एप्स, ICICI बैंक का M-Pesa व ICICI Appathon मोबाइल एप्स, केनरा बैंक का M-Wallet एप्स, बैंक ऑफ

महाराष्ट्र का Maha Lakhpati चिल्लर एप्स, आदि के माध्यम से बैंकों ने ग्राहकों को 24*7 बैंकिंग सेवाएं प्रदान करना शुरू किया है, परन्तु डिजिटलाईजेशन एक सतत प्रक्रिया है जिसमें निरंतर नए आयाम जुड़ते जा रहे हैं। डिजिटलाईजेशन के इस युग में ग्राहक अधिक स्वतंत्र हैं, मोबाइल बैंकिंग, नेट बैंकिंग विभिन्न प्रकार के बैंकिंग एप्स आदि के माध्यम से आज बैंकिंग सुविधाओं के लिए उसके पास बहुत से विकल्प उपलब्ध हैं। पेट्टीएम, फोन-पे, गूगल-पे, भीम एप्स, यूपीआई, एयरटेल मनी आदि भी ग्राहकों को राशि अंतरण व विभिन्न तरह के बिलों के भुगतान की सेवाएं प्रदान करने लगे हैं। आज के समय में ग्राहक राजा है, सभी बैंकों के क्रेडिट/डेबिट कार्ड, ई वालेट आदि ग्राहकों को भुगतान करने पर अथवा रिफ्रेन्स देने पर कैश बैंक अथवा रिवाइड पाइंट्स उपलब्ध कराते हैं जिससे उसे बिल भुगतान पर डिस्काउंट प्राप्त होता है अथवा वह इन पाइंट्स को भविष्य में भुना सकता है, ऐसे ही कुछ प्रमुख एप्स निम्नलिखित हैं :-

लोको (Loco)

यह एक रोचक लाइव ट्राइविया एप है जिसमें प्रतिदिन सुबह 10:30 बजे क्विज शुरू होती है और इसमें 10 सवालों के जवाब 10 सेकेंड में देने होते हैं। इसमें करेंट अफेयर्स, खेल, सामान्य ज्ञान, राजनीति, इतिहास, फिल्म जगत (बॉलीवुड/ हॉलीवुड) आदि क्षेत्रों से सवाल पूछते जाते हैं। इसमें विजेता प्रतिभागियों के पेट्टीएम वॉलेट में रिवाइड क्रेडिट किया जाता है।



एमसेंट ब्राउजर (mCent Browser)

यह एक ब्राउजर एप है जो अपने यूजर्स को प्री रिचार्ज और डाटा के रूप में रिवार्ड प्रदान करती है। यूजर्स को इसमें कुछ वेबसाइट को विजिट करना होता है। यूजर्स इसमें इंटरनेट सर्फ, वीडियो देख या डाउनलोड जैसे काम कर सकते हैं और प्राप्त होने वाले रिवार्ड प्वाइंट्स को रिचार्ज के लिए रिडीम कर सकते हैं।

मूकैश (Moocash)

यह एक एंड्रॉयड एप है जो कुछ बहुत आसान नए एप्स या गेम्स का टेस्ट करने, वीडियो देखने, दोस्त को रेफर करने, सर्वे का उत्तर देने आदि के लिए कैश, गिफ्ट कार्ड (अमेजन, गूगल प्ले), बिटकॉइन जैसे रिवार्ड देती है। मिलने वाले कैश /रिवार्ड को गूगल या पेपाल रिवार्ड कार्ड के जरिये रिडीम किया जा सकता है।

एपबाउंटी (AppBounty)

यह एप एंड्रॉयड और आईओएस दोनों तरह के ऑपरेटिंग सिस्टम के लिए उपलब्ध है, इसमें उपयोगकर्ताओं को एपबाउंटी द्वारा बताई गई एप्स को डाउनलोड करना होता है और प्रत्येक एप के लिए उन्हें रिवार्ड मिलता है। यह इंटरनेशनल रिवार्ड होता है जिस को नेटफ्लिक्स, स्टीम, अमेजन, प्लेस्टेशन, गूगल प्ले आदि से गिफ्ट कार्ड के माध्यम से खर्च किया जा सकता है।

बिटवॉकिंग (Bitwalking)

यह एक बहुत ही मजेदार एप है जोकि एंड्रॉयड और आईओएस दोनों तरह के यूजर्स के लिए उपलब्ध है इसमें उपयोगकर्ताओं को को केवल चलना, दौड़ना, नाचना आदि जैसे आसान से काम करने होते हैं। यह मानव गतिविधियों को मुद्रा में बदलती है। इसमें प्रत्येक 10,000 कदम चलने पर यूजर को 1बिटवॉकिंग डॉलर मिलता है। बिटवॉकिंग डॉलर को ऑनलाइन स्टोर पर इस्तेमाल किया जा सकता है या इसे आप बेचकर कैश भी हासिल कर सकते हैं।

स्क्वाड रन (Squad Run)

यह एक स्वदेशी एंड्रॉयड एप है, इसका उपयोग कर विभिन्न कंपनियों जैसे स्नैपडील, ओला, फ्लिपकार्ट, यात्रा, आदि के बारे में फीडबैक देने, इमेज को टैग करने, प्रोडक्ट्स

को कैटेगरीज करने आदि के बदले स्क्वाड कॉइन मिलते हैं, जिसे आप अपने पेटीएम वॉलेट या पेयूमनी के जरिये रिडीम कर सकते हैं। यहाँ पर ग्राहकों के मन में शंका उत्पन्न होती है की यदि इन ई-वॉलेट के उपयोग में उनके साथ धोखाधड़ी होती अथवा उनका पैसा कहीं अटक जाता है तो उसकी शिकायत कहाँ करें ?

इस हेतु RBI ने ई-वॉलेट का उपयोग करने वाले ग्राहकों के हितों की सुरक्षा के लिए निम्नलिखित कदम उठाए हैं

1. **प्रॉड होने पर ग्राहक की सीमित जिम्मेदारी:-** आरबीआई के दिशानिर्देशों में अनधिकृत ट्रांजेक्शन पर ग्राहकों और प्रीपेड इंस्ट्रूमेंट (पीपीआई) कंपनियों की जिम्मेदारी परिभाषित की गई है। कंपनी की लापरवाही के चलते प्रॉड ट्रांजेक्शन की स्थिति में ग्राहक की कोई जिम्मेदारी नहीं बनेगी एवं यदि न तो ग्राहक और न ही सुविधा देने वाली कंपनी से गलती होती है, बल्कि कहीं और से चूक होती है तब भी ग्राहक का कोई दायित्व नहीं बनेगा किन्तु इसके लिए ग्राहक को तीन दिनों के भीतर अपनी कंपनी को जानकारी देनी पड़ेगी।

यदि ग्राहक को कंपनी से संपर्क करने में सात दिन का समय लग जाता है तो ग्राहक के दायित्व की सीमा 10,000 रुपये तक होगी, यह अवधि भी बीत जाने पर ग्राहक को नुकसान उठाना पड़ सकता है, बशर्त की पीपीआई इश्यू करने वाली कंपनी अपना रुख नरम रखे।

2. **संदिग्ध इलेक्ट्रॉनिक पेमेंट ट्रांजेक्शन :-** ई-वॉलेट और अन्य प्रीपेड इंस्ट्रूमेंट को इस्तेमाल करने वाले ग्राहकों की एक बड़ी चिंता रही है संदिग्ध ट्रांजेक्शन में पैसा गंवाने की, उन्हें इसमें मुआवजे का भी कोई रास्ता नहीं दिखता है। इस हेतु आरबीआई ने अवैध इलेक्ट्रॉनिक पेमेंट ट्रांजेक्शन में सबूत देने की जिम्मेदारी ग्राहक की जगह ई-वॉलेट कंपनियों पर डाल दी है, बैंकिंग रेगुलेटर 2017 में पहले ही बैंकों के लिए यह नियम बना चुका है।

3. **निर्धारित समय में पैसों की वापसी:-** किसी संदेहास्पद ट्रांजेक्शन को समय से ई-वॉलेट कंपनी के संज्ञान में लाने पर गंवाई रकम को उसे वॉलेट या अन्य पीपीआई में 10 दिनों के भीतर लौटाना होगा। कंपनी को न सिर्फ ग्राहक की

शिकायत को निपटाना होगा बल्कि बोर्ड की मंजूर नीति के अनुसार ग्राहक की देनदारी या दायित्व को भी तय करना होगा। हालांकि, इस प्रक्रिया को शिकायत प्राप्ति के 90 दिनों के भीतर निपटाना होता है, यदि ई-वॉलेट कंपनी इसमें विफल रहती है तो उसे ग्राहक को निर्धारित हर्जाना देना होगा, फिर भले ही नुकसान ग्राहक की गलती से हुआ हो।

4. ट्रांजेक्शन एलर्ट के लिए अनिवार्य रजिस्ट्रेशन:- आरबीआई ने ई-वॉलेट कंपनियों को निर्देशित किया है कि वे अनिवार्य रूप से ग्राहकों का एसएमएस एलर्ट सेवाओं के लिए पंजीकरण कराएं, जिससे उन्हें इलेक्ट्रॉनिक पेमेंट ट्रांजेक्शन होने पर तुरंत पता चल सके। ग्राहकों का भी दायित्व बनता है कि वे उक्त दिशानिर्देशों का फायदा उठाने के लिए सही संपर्क के ब्योरे के साथ एसएमएस एलर्ट के लिए रजिस्टर कराएं।

5. संदिग्ध लेनदेन की आसान रिपोर्टिंग:- आरबीआई ने ई-वॉलेट कंपनियों से ग्राहकों को संदिग्ध लेनदेन के प्रति जागरूक करने एवं उक्त की सूचना जल्द से जल्द देने के लिए निर्देशित किया है, क्योंकि इस तरह के ट्रांजेक्शन की सूचना जितनी देर से मिलेगी कंपनी/ग्राहक के लिए नुकसान का खतरा उतना ज्यादा बढ़ जाएगा। नुकसान की सूचना देने के लिए कंपनियों को 24 घंटे टोल-फ्री हेल्पलाइन, वेबसाइट, एसएमएस और ईमेल सेवा जारी रखनी होगी। ये कंपनी की जिम्मेदारी है कि वे शिकायत दर्ज करने के लिए अपने एप या वेबसाइट पर सीधा लिंक मुहैया कराएं। साथ ही ग्राहकों का भी फर्ज़ है कि एसएमएस एलर्ट की अनदेखी नहीं करें व जितनी जल्दी हो सके, कंपनी को संदिग्ध लेनदेन की सूचना दें।

अब प्रीपेड इंस्ट्रूमेंट (PPI), ई-वॉलेट और अन्य पेमेंट सर्विस प्रोवाइडर की शिकायत के लिए भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) द्वारा देश के 19 शहरों में 21 स्थानों पर ओम्बड्समैन कार्यालय बनाए गए हैं जहाँ ग्राहक प्रीपेड इंस्ट्रूमेंट (PPI), ई-वॉलेट और अन्य पेमेंट सर्विस प्रोवाइडर की शिकायत कर सकते हैं। हालांकि, बैंक की शिकायत के लिए अब भी बैंकिंग ओम्बड्समैन से संपर्क करना होगा। यह बात ऑनलाइन ट्रांजेक्शन के लिए भी लागू होती है। यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (यूपीआई), भारत बिल पेमेंट सिस्टम, भारत क्यूआर कोड और यूपीआई क्यूआर कोड से जुड़ी शिकायतें भी ओम्बड्समैन के दायरे में आएंगी।

इंटरनेट बैंकिंग के माध्यम से आज लगभग समस्त बैंकिंग सेवाएं घर बैठे ग्राहक को उपलब्ध हैं, आज ग्राहक बैंक में आए बिना अपनी सुविधानुसार 6 माह, एक वर्ष या किसी भी अवधि हेतु ऑनलाइन मियादी जमा रसीद (TDR) बना सकता है। साथ ही अन्य बैंकिंग सुविधाएँ जैसे कि चेक बुक हेतु आवेदन, पीपीएफ / सुकन्या समृद्धि खाते में राशि जमा करना, खाते का स्टेटमेंट प्राप्त करना, NEFT/RTGS, STANDING INSTRUCTIONS, घ्रइए आदि ऑनलाइन उपलब्ध हैं। आज मात्र आईएफएससी कोड एवं खाता नंबर की जानकारी से ही ईई/ऊउए/ घ्रइए द्वारा धनराशि का प्रेषण किया जा सकता है, घ्रइए के माध्यम से अधिकृत मोबाइल नंबर एवं एमएमआईडी की जानकारी द्वारा ही धन प्रेषण किया जा सकता है। ग्राहकों के सार्थक/ऊश कार्ड का उपयोग करते समय धोखाधड़ी की सबसे ज्यादा प्रकरण पासवर्ड को लेकर होते हैं, इस हेतु अब बैंकों द्वारा ग्रीन पिन का भी विकल्प उपलब्ध कराया जा रहा है, इसके माध्यम से ग्राहक/ऊश मशीन में ग्रीन पिन का विकल्प चुनकर अपने मोबाइल पर एक ओटीपी (वन टाइम पासवर्ड) प्राप्त करता है जिसके द्वारा वह प्रत्येक ट्रांजेक्शन हेतु एक नया पासवर्ड बना सकता है, इससे उसे दोहरा लाभ मिलता है, एक तो उसे हमेशा पासवर्ड याद नहीं रखना होगा, दूसरे पासवर्ड बदलते रहने से जालसाजों के लिए Yeer ATM के माध्यम से षड करना आसान नहीं रहेगा।

इस डिजिटलाइजेशन की प्रक्रिया ने बैंकिंग उद्योग में आमूल-चूल परिवर्तन ला दिया है, जहाँ इससे बैंक शाखाओं में ग्राहकों का फुटफॉल कम हुआ है, वहीं इस नई टेक्नालजी ने कुछ चुनौतियाँ भी पैदा की हैं। टेक्नालजी के अल्पज्ञान एवं टेक्नालजी के उपयोग में बरती जाने वाली सावधानियों की जानकारी न होना अथवा उनकी अनदेखी करना षड की संभावना को बढ़ा देता है।

आज का ग्राहक तकनीकी कौशल में निपुण है, अपनी ज्यादातर आवश्यकताओं की पूर्ति वह घर बैठे मोबाइल के माध्यम से ही पूरी कर लेता है, ऐसे में छोटी-मोटी बैंकिंग आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भी वह मोबाइल बैंकिंग एप्स का उपयोग करता है, किन्तु मोबाइल बैंकिंग एप्स के उपयोग में कई सावधानियां रखनी आवश्यक हैं अन्यथा यदि फोन कहीं खो जाए या चोरी

हो जाए तो परेशानी और बढ़ सकती है एवं आपकी सारी निजी जानकारी गलत हाथों में पहुँच सकती है जिसके द्वारा आपके बैंक खाते में उपलब्ध समस्त जमा राशि धोखाधड़ी से निकाली जा सकती है। मोबाइल बैंकिंग के सुरक्षित उपयोग के लिए निम्नलिखित कुछ बातों का ख्याल रखा जाना चाहिए।

निजी जानकारी का ध्यान रखें: मोबाइल बैंकिंग के उपयोग में सबसे जरूरी बात है कि आप निजी जानकारियों का ध्यान रखें। मोबाइल बैंकिंग के लिए आपके खाता क्रमांक, पैन कार्ड जन्म तिथि, पासवर्ड, डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड जैसे कई निजी व गोपनीय जानकारियों का उपयोग किया जाता है, ऐसे में हैकर्स की नजर अक्सर आपकी एक छोटी सी लापरवाही पर होती है। आपकी एक छोटी लापरवाही से हैकर्स आपका बैंक अकाउंट हैक करके आसानी से आपको नुकसान पहुंचा सकते हैं। ऐसे में जरूरी है कि मोबाइल बैंकिंग का उपयोग करते समय आप सुरक्षा के लिए सिक्योरिटी सॉफ्टवेयर का उपयोग करें।

पासवर्ड सुरक्षा: डिजिटल बैंकिंग में पासवर्ड की सुरक्षा सबसे अहम है। यदि आप मोबाइल बैंकिंग का उपयोग करते हैं तो अपने पासवर्ड को हमेशा मजबूत बनाएं जैसे पासवर्ड में कुछ स्पेशल कैरेक्टर, अंक व अल्फाबेट्स का समावेश करें एवं अपने फोन को हमेशा ऑटो लॉक लगाकर रखें। भूलकर भी पासवर्ड जन्मतिथि, आपके नाम या नंबर पर आधारित न हो क्योंकि ऐसे पासवर्ड को हैक करना बेहद आसान है।

वेबसाइट/पोर्टल पर ही ब्राउजिंग करें: मोबाइल बैंकिंग का उपयोग करने के लिए कभी भी किसी भी ऐसी साइट का उपयोग न करें जिस पर आपको विश्वास न हो या उसके बारे में आपको जानकारी न हो। बैंक की अधिकृत वेबसाइट का ही उपयोग करें। अधिकतर अधिकृत मोबाइल बैंकिंग एप्स 50 एमबी से लेकर 200 एमबी तक की होती हैं। कई बार कुछ ऐसी साइट ओपन हो जाती हैं जहां आपको कुछ सर्च व डाउनलोड करने के लिए 8 से लेकर 10 एमबी तक मेमोरी स्पेस का ऑप्शन मिलता है, ऐसे में ग्राहक डाटा बचाने के लिए ऐसी वेबसाइट का उपयोग करता है, ऐसी वेबसाइट के उपयोग करना मतलब वायरस को बुलावा देने जैसा है। मोबाइल बैंकिंग के दौरान ऐसी साइट का उपयोग गलती से भी न करें क्योंकि ऐसी फर्जी वेबसाइट द्वारा

जालसाज आपका सारा गोपनीय डाटा प्राप्त कर आपके बैंक खाते के साथ धोखाधड़ी को अंजाम दे सकते हैं।

एवं पब्लिक वाई-फाई का उपयोग न करें: मोबाइल बैंकिंग का इस्तेमाल करते समय ध्यान रखें कि गलती से भी पब्लिक वाई-फाई व मोबाइल ब्लूटूथ का उपयोग न करें, क्योंकि इनके माध्यम से आपके मोबाइल में वायरस आसानी आ सकता है। वायरस के आने से फोन में सुरक्षित डाटा को नुकसान हो सकता है। मोबाइल नेटवर्क के उपयोग के दौरान वायरस के खतरे से बचने के लिए फोन में नवीनतम एंटी वायरस फायरबॉल और सेफ्टी सॉफ्टवेयर का उपयोग करें।

हिस्ट्री को डिलीट करना ना भूलें: यदि आप इंटरनेट के माध्यम से मोबाइल बैंकिंग का उपयोग करते हैं तो ध्यान रखें कि उपयोग के बाद ब्राउजिंग हिस्ट्री को डिलीट कर दें। ताकि यदि कभी आपका फोन गुम हो जाए या हैक हो जाए तो कोई आपके फोन में सुरक्षित जानकारी का गलत इस्तेमाल न कर सके।

फोन खोने की स्थिति में बैंक की वेबसाइट पर जाकर अपना यूसर प्रोफ़ाइल अवश्य डिलीट कर दें।

भी ओटीपी अथवा पासवर्ड शेयर ना करें:

मोबाइल बैंकिंग के माध्यम से ट्रांज़ैक्शन करते समय आपके रजिस्टर्ड मोबाइल पर एक ओटीपी (वन टाइम पासवर्ड) आता है, जिसे भूलकर भी किसी अन्य के साथ शेयर ना करें।

इस तरह हम कह सकते हैं की आज डिजिटल माध्यम से बैंकिंग करना बहुत ही सुविधाजनक है एवं इससे समय की बचत भी होती है, किन्तु साथ ही हमें इस माध्यम के उपयोग के साथ जुड़ी सावधानियों की भी पूर्ण जानकारी रखना उतना ही आवश्यक है। यह तकनीकी का अंतिम रूप नहीं है, तकनीकी में समयानुसार और भी बदलाव आते रहेंगे जिसे हमें देर-सवेर स्वीकार करना ही होगा।

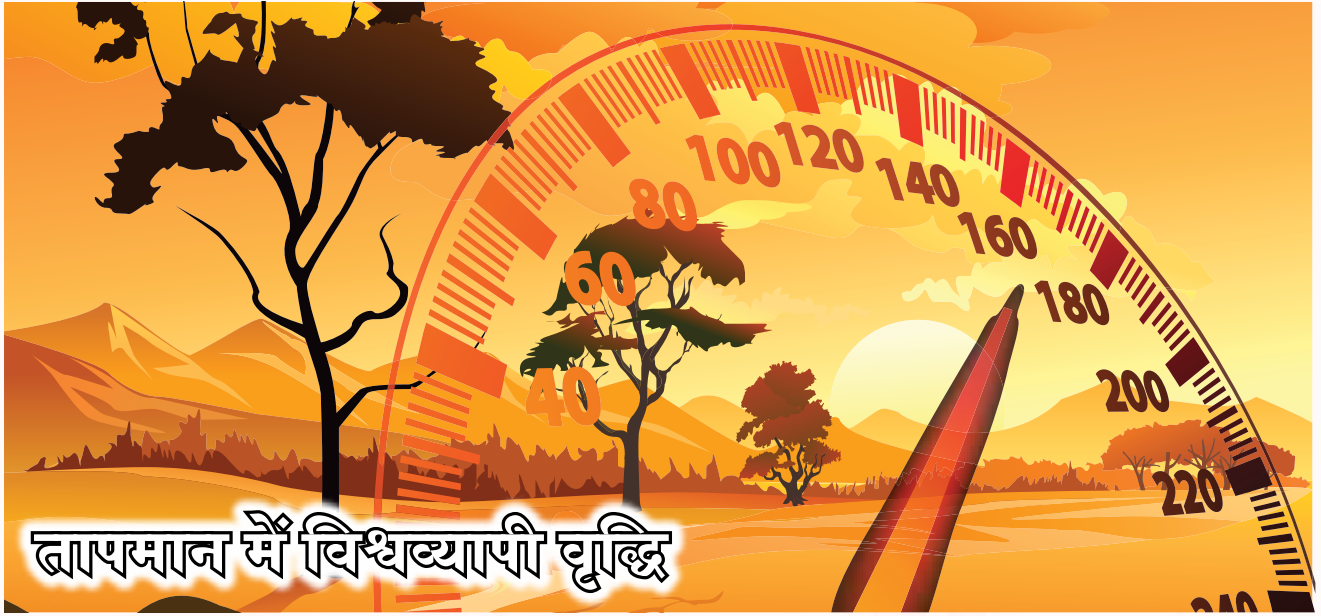
संदर्भ- समय-समय पर प्रकाशित न्यूज पेपर के संकलन जैसे नई दुनिया/जागरण इत्यादि।

अमरीश कुमार

वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

भोपाल अंचल





मौसम का व्यवहार घंटों में परिवर्तित हो सकता है लेकिन इसके विपरीत जलवायु में परिवर्तन वर्षों के अंतराल पर ही संभव है। इस प्रकार मौसम और जलवायु के अंतर को समझा जा सकता है। हम जानते हैं कि वैश्विक जलवायु में लगातार बदलाव हो रहा है क्योंकि लम्बी अवधि में औसतन पृथ्वी की सतह और समुद्र का वैश्विक तापमान लगातार बढ़ रहा है। इस तापमान में वृद्धि को ही ग्लोबल वार्मिंग की संज्ञा दी गयी है और इसकी जिम्मेदारी किसी पर डाली नहीं जा सकती है क्योंकि हम सभी किसी न किसी तरह से जलवायु के इस विषम परिवर्तन के जिम्मेदार हैं लेकिन जब भी ग्लोबल वार्मिंग की बात आती है तो हर कोई दुनिया को बदलना चाहता है **खुद को नहीं**।

विश्व प्रख्यात वैज्ञानिक **स्टीफन हॉकिंग** ने गणना की जिसके अनुसार पृथ्वी पर मानवता का केवल 1000 वर्ष शेष है और आधे साल बाद ही उन्होंने जलवायु परिवर्तन में अधिकता, क्षुद्रग्रह के हमले, अधिकतम जनसंख्या वृद्धि, महामारी, परमाणु और बायोलॉजिकल वॉर के खतरे की वजह से 100 वर्ष और कम कर दिए। इससे पता लगता है कि पृथ्वी पर जीवन समाप्त हो रहा और हम उस पथ पर तेज़ी से अग्रसर हैं। जलवायु परिवर्तन के बारे में एक तथ्य स्पष्ट है कि पृथ्वी गर्म हो रही है, मानव निर्मित उत्सर्जन वार्मिंग पैदा कर रहा है और यह प्रभाव समय के साथ और खराब हो जाएगा।

जलवायु परिवर्तन पर महत्वपूर्ण निकाय

जलवायु परिवर्तन पर अंतर्राष्ट्रीय पैनल (आईपीसीसी) जलवायु परिवर्तन पर महत्वपूर्ण निकाय है। यह निकाय संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम और विश्व मौसम विज्ञान संगठन द्वारा 1988 में स्थापित किया गया था ताकि जलवायु परिवर्तन और इसकी संभावित पर्यावरणीय और सामाजिक आर्थिक प्रभावों की वर्तमान स्थिति पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण विश्व को उपलब्ध कराया जा सके। आईपीसीसी, यह किसी भी शोध का संचालन नहीं करता है और न ही वह जलवायु से संबंधित डाटा या मापदंडों की निगरानी करता है अपितु जलवायु परिवर्तन की समझ के लिए दुनिया भर में निर्मित सबसे हाल ही में वैज्ञानिक, तकनीकी और सामाजिक-आर्थिक जानकारी की समीक्षा और मूल्यांकन करता है। आईपीसीसी की पहली आकलन रिपोर्ट 1990 ने जलवायु परिवर्तन के महत्व को रेखांकित किया क्योंकि इसके परिणामों से निपटने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की आवश्यकता थी। इसने ग्लोबल वार्मिंग को कम करने और जलवायु परिवर्तन के परिणामों से निपटने के लिए महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय संधि, जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन (यूएनएफसीसीसी) के निर्माण के लिए अग्रणी भूमिका निभाई थी। आईपीसीसी की पहली आकलन रिपोर्ट 1990 में पूरी हुई। जिसके कार्यकारी सारांश में कहा गया कि वे निश्चित हैं कि मानव गतिविधियों से होने वाले उत्सर्जन से ग्रीनहाउस गैसों की वायुमंडलीय सांद्रता काफी

बढ़ रही है, जिसके परिणामस्वरूप पृथ्वी की सतह के अतिरिक्त तापमान में वृद्धि हुई है। ग्रीनहाउस प्रभाव के आधे से अधिक के लिए केवल सीओ-2 कार्बन डाई आक्साइड का मानवीय उत्सर्जन जिम्मेदार है उनका अनुमान है कि ठसामान्य रूप से व्यापार (बीएयू) परिदृश्य के तहत, वैश्विक औसत तापमान 21 वीं शताब्दी के दौरान प्रति दशक लगभग 0.3 डिग्री सेल्सियस बढ़ जाएगा।

जलवायु परिवर्तन : मुख्य तथ्य और प्रभाव

1- **पृथ्वी के तापमान में वृद्धि** : बीसवीं सदी की शुरुआत से औसत सतह वायु का तापमान 1.40 फारेनहाइट बढ़ा है, जो कि 1970 के दशक के बाद से सबसे अधिक गर्म है तथा पहले तीन दशकों में से इससे पहले प्रत्येक के गर्मियों के साथ दशक 2000 रिकॉर्ड का सबसे गर्म के दशक था। हालांकि हवा के तापमान में वृद्धि कारण अत्यधिक गर्मी को पृथ्वी द्वारा अवशोषित करना है साथ ही 1970 के मध्य से महासागरों ने अत्यधिक गर्मी को अवशोषित किया है। जिससे पृथ्वी के तापमान में लगातार वृद्धि हुई है।

2- **जलवायु हमेशा बदली है** - लेकिन मानव इतिहास में कभी इतनी तेज़ी से नहीं। पृथ्वी की जलवायु में हमेशा बदलाव हुआ इसमें कोई विवाद नहीं है लेकिन पिछले 400,000 वर्षों में, कार्बन डाइऑक्साइड एकाग्रता, वैश्विक तापमान, और समुद्र के स्तर का एक दूसरे के साथ निकट संबंध स्वाभाविक रूप से भिन्न है। पिछली शताब्दी में अचानक बदलाव आया और तापमान अब स्थिर नहीं हैं अचानक बढ़ गए हैं जोकि पिछले 10000 वर्षों से स्थिर था।

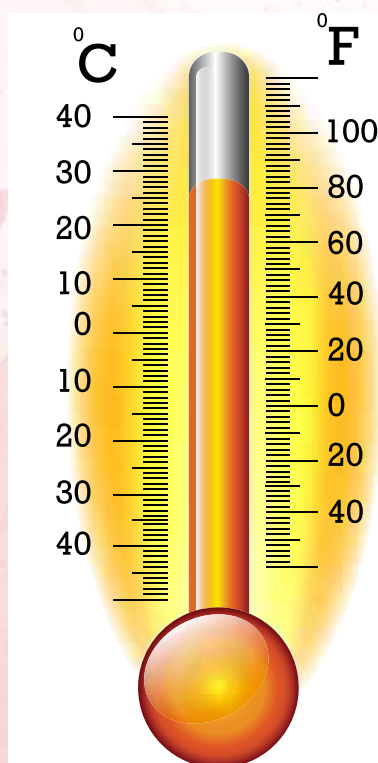
3- **ग्लोबल वार्मिंग** : कारण जीवाश्म ईंधन से उत्सर्जन-ग्रीनहाउस गैस (कार्बन डाइऑक्साइड समेत) जीवन के लिए आवश्यक हैं क्योंकि हम इसे जानते हैं। उनके बिना पृथ्वी की सभी धूप की गर्मी को अंतरिक्ष में खो देती है तथा ग्रीन हाउस गैसों में वृद्धि के साथ, अधिक

गर्मी को रोका जा सकता है जिससे औसत वैश्विक तापमान में वृद्धि हो सकती है। मानव गतिविधियों के परिणामस्वरूप ग्रीनहाउस गैसों की वायुमंडलीय सांद्रता में वृद्धि हुई है, विशेष रूप से जीवाश्म ईंधन के जलने के कारण। ग्रीनहाउस गैसों के इन बढ़ते स्तरों को सीधे मानव निर्मित उत्सर्जन से जोड़ा जाता है- और ये उत्सर्जन जलवायु में होने वाले बदलावों के लिए जिम्मेदार हैं।

4- **वैश्विक औसत समुद्री स्तर में वृद्धि एवं प्रभाव** - वैश्विक औसत समुद्री स्तर 1870 से 8-10 इंच बढ़ गया है। यह प्रवृत्ति का आगे भी बढ़ने का अनुमान है। शताब्दी (2100) के अंत तक, दुनिया भर में समुद्र के स्तर 2-3 फीट या अधिक बढ़ सकते हैं जोकि ग्रीनलैंड और अंटार्कटिका में बर्फ की चादरों के पिघलने पर निर्भर करता है। बढ़ते समुद्र के स्तर का दुनिया भर के सभी समाजों पर प्रभाव होगा। साथ ही इन प्रभावों से दुनिया भर के समुद्र तटों पर मीठे पानी और भूजल की आपूर्ति कम होने के खतरे की सम्भवना को बढ़ाता है।

5- **महासागर का अम्लीय बनना एवं पारिस्थितिक तंत्र प्रभाव** : महासागर मानव निर्मित कार्बन उत्सर्जन का अनुमानित 25-50% अवशोषित करता है। सीओ 2 और

समुद्री पानी के बीच होने वाली रासायनिक क्रियाएं एक एसिड बनती जो जल के पीएच को कम करती है, जिससे समुद्री जल अधिक अम्लीय होता है। अधिक अम्लता के बिना, समुद्रीय जीवन को बढ़ने के लिए आवश्यक शैल का निर्माण करने में असमर्थ हो जाएगा, जो कि पूरे समुद्रीय पारिस्थितिक तंत्र को बदल सकता है। सागर का रसायन विज्ञान में परिवर्तन हजारों वर्षों तक अपरिवर्तनीय हैं। जीवन चक्र और खाद्य श्रृंखला के नीचे कई समुद्री प्रजातियों के संसाधन एकत्रित करना, जैसे वायुमंडल, समुद्री घोंघे और प्रवाल, वार्मिंग को प्रभावित करता है। जिससे कई बड़े समुद्री जानवरों के भोजन के आधार के रूप में, उनकी कमी होगी और जो खाद्य श्रृंखला की उस कड़ी



को नुकसान पहुंचा सकती है जो मनुष्य भोजन के स्रोत के रूप में उपयोग करते हैं।

6- **मौसम की घटनाओं का अधिक तीव्र और अस्थिर होना** - जलवायु परिवर्तन के साथ अलग-अलग मौसम घटनाओं को जोड़ना मुश्किल है, लेकिन जलवायु में बदलाव का मतलब यह है कि समग्र मौसम की घटनाओं का कुल मिलाकर, ऐतिहासिक दृष्टि से अधिक तीव्र और अस्थिर होना। जैसे-जैसे तापमान में वृद्धि होती है, अधिक पानी वाष्पीकरण होता है और गर्म हवा में अधिक तूफान की संभावना बढ़ती है। जलवायु परिवर्तन के प्रभाव पूरे विश्व में एकरूप नहीं हैं। कुछ क्षेत्रों में सूखा की संभावना अधिक हो जाएगी, जैसे अमेरिकी पश्चिमी तट (वेस्ट कोस्ट) और मध्य पूर्व। सूखे अधिक बार तथा अवधि में और अधिकता रहेंगी।

7- **तापमान में छोटे बदलावों से बहुत अधिक परिणाम** : भविष्य के ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन के स्तर पर निर्भर करते हुए, जलवायु परिवर्तन के मॉडल ग्लोबल वार्मिंग की भविष्यवाणी करते हैं कि ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन और वातावरण संवेदनशीलता पर निर्भर करते हुए वर्ष 2100 तक औसत वैश्विक तापमान 2 डिग्री फ़ारेनहाइट से 11.5 डिग्री फ़ारेनहाइट तक की वृद्धि संभव है। इन परिवर्तनों के परिणाम ये होंगे कि :-

- तापमान में 3.8 डिग्री फ़ारेनहाइट की वृद्धि आर्कटिक क्षेत्र में पौधे और पशु जीवन में एक विनाशकारी कमी का कारण होगी।
- तापमान में 5.4 डिग्री फ़ारेनहाइट की वृद्धि के सभी प्रमुख क्षेत्रों में सभी प्रमुख अनाज फसलों की पैदावार को 20% से अधिक तक कम कर सकती है।
- तापमान में 7.2 डिग्री फ़ारेनहाइट की वृद्धि दक्षिणी अफ्रीका, दक्षिण पूर्व एशिया और भूमध्य बेसिन में सूखे की घटनाओं की आवृत्ति दोगुनी कर देगी।

8- **जलवायु परिवर्तन**: मौजूदा आजीविका और जीवन शैली का खतरा-जलवायु परिवर्तन एक अमूर्त नहीं है, केवल ध्रुवीय भालू ही चिंता का विषय नहीं है बल्कि जलवायु परिवर्तन दुनिया भर में मौजूदा आजीविका और जीवन शैली का खतरा है।

- जनसंख्या का जन विस्थापन, विशेष रूप से तटीय शहरों के निवासियों और अकाल से पीड़ित क्षेत्रों से।
- तापमान की वृद्धि से सूखे और बाढ़ की विविधता होगी जिससे खाद्य असुरक्षा जैसी स्थिति उत्पन्न होगी।
- पीने और सिंचाई के पानी की कमी।

9- **जलवायु परिवर्तन राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा** : जलवायु परिवर्तन एक ठस्थिरता के त्वरक और खतरा अत्यधिक बढ़ाने वाला कारक है। संभावित वैक्टर जिसके माध्यम से जलवायु परिवर्तन राष्ट्रीय सुरक्षा को प्रभावित करेगा, उनमें शामिल हैं-

- भोजन उत्पादकता में गिरावट।
- ताजे पानी की उपलब्धता में कमी।
- अधिकतम द्रुत प्रवास।
- राजनीतिक निर्देशकों में बदलाव।
- चरम मौसम से मानव आजीविका के लिए खतरा।

किसी भी काम की सही शुरुआत कल से नहीं आज से होती है हम वर्तमान में भविष्य के लिए जीते हैं मेहनत करते हैं और उसे सुरक्षित करने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहते हैं। लेकिन यदि आपको अचानक पता चले कि आगे कोई भविष्य ही नहीं है तो...

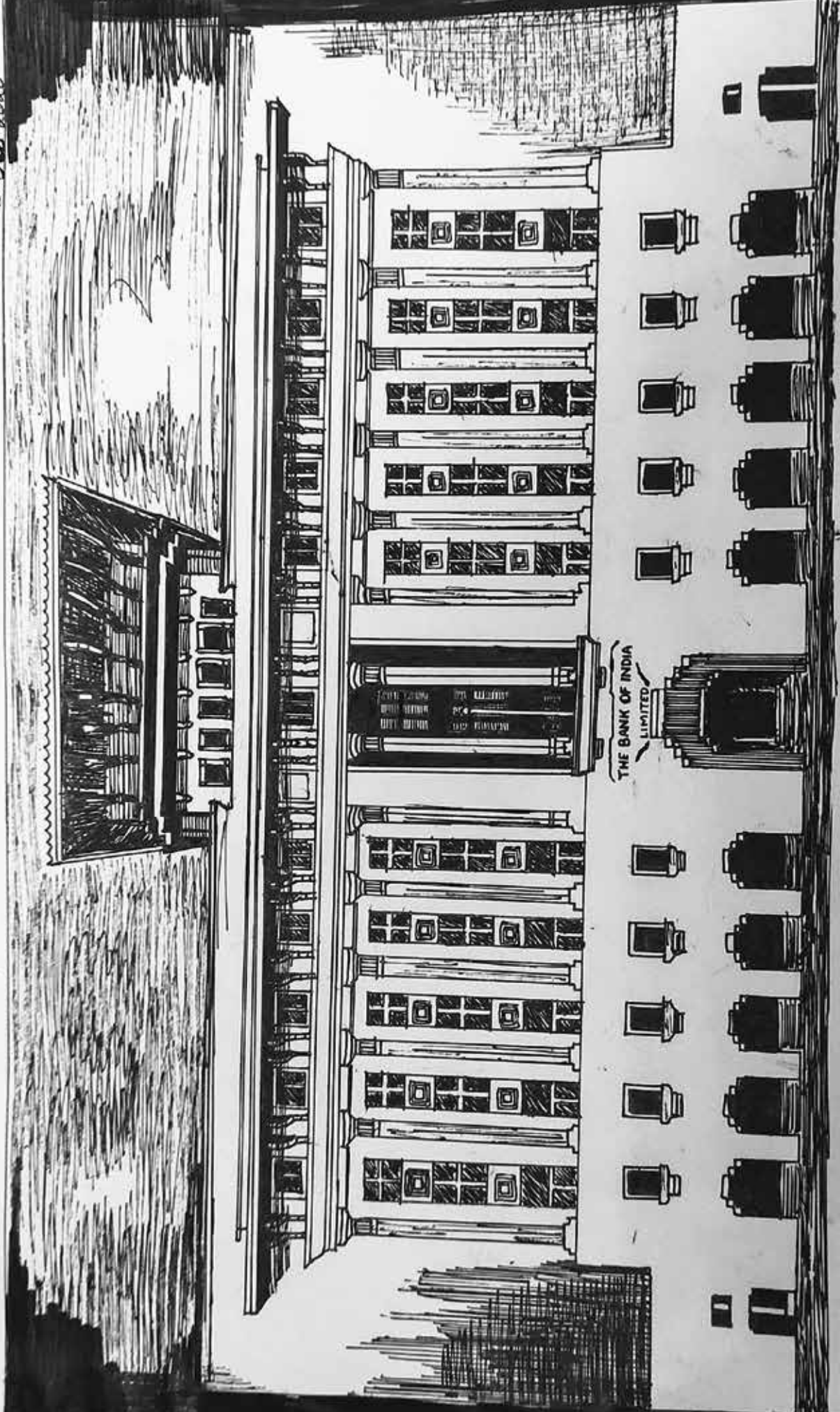
ये हमको सोचना है कि हम किस भविष्य की तैयारी कर रहे हैं उसकी जिसमें पैसा होते हुए भी कीमत लगाने के लिए अन्न, पीने को पानी और रहने की एक सुरक्षित जगह ही न हो। देखने में तो ये संभव ही नहीं लगता क्योंकि हम इसकी कल्पना ही नहीं करते। क्या अभी हमारी मुश्किल समय से मुलाकात नहीं हुई है या फिर हम उसे पहचान नहीं रहे? ये प्रश्न सभी के लिए हैं। जो भी ही हमें समस्या को अभी पहचानना होगा क्योंकि यह कहना गलत होगा कि ग्लोबल वार्मिंग हमारा भविष्य है क्योंकि ग्लोबल वार्मिंग हमारा वर्तमान है।

अमित कुमार

शाखा प्रबन्धक-बड़ोवाला शाखा
देहरादून अंचल



5 Feb 2020



BANK OF INDIA'S HERITAGE BUILDING, located at 70-80 M.G.Road, opposite to Flora fountain, Fort, Mumbai was designed by M/s. Gregson Batley & King. It functioned .as the head office of BOI from 1950 to 1971



Sketch by Reshma Pavangat
Officer - Chennai Service Branch

